लंकाधिपति रावण कृत
उड्डीशतंत्र
योगिराज यशपाल जी

॥ तंज्योति गुह्य विद्या शोधमालान्तर्गत प्रथम प्राचीन ग्रन्थः ॥

लंकाधिपति रावण कृत

उड्डीश तन्त्र

हिन्दी भाषा टीका एवं व्याख्या सहितम्

श्री यशपाल जी

संस्थापक एवं प्रबन्ध निर्देशक
तंज्योति गुह्य विद्या साधन एवं अनुसाधन केन्द्र

मूल्य: 80.00

प्रकाशक

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन), हरिद्वार

प्रकाशन :

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)

रेलवे रोड, (आरती होटल के पीछे)

हरिद्वार–२४६४०१

मुख्य वितरक–

गगन बुक डिपो

४६९४, चरखेवालान (निकट नई सड़क, दाईवाड़ा)

दिल्ली-६ फोन : (०११) ३९५०६३५

अनुवादक–

श्रीयशपाल जी

पांचवां संस्करण 2002

मुद्रक–

राजा ऑफसेट प्रिंटर्स

विकास मार्ग, दिल्ली

॥ श्री उड्डीश तन्त्रऽऽन्तर्गते अनुक्रमाणिका ॥

❑❑❑

॥ ॐ तन्त्रायिणे नमः ॥

नम्र निवेदन

रावण कृत उड्डीश तन्त्र देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि तन्त्र कोई आज की खोज नहीं है बल्कि यह तो प्रभु प्रसाद स्परूप प्राप्त हुई 'ज्ञान गंगा' है जो अनादिकाल से प्रवाहित हो रही है। जगत् के सृष्टिकर्ता ने सृष्टिकाल के शुभारम्भ में ही जगत् में स्थित जीवों के कल्याण, भोग तथा पुरुषार्थ की प्राप्ति हेतु एक ज्ञान गंगा प्रवाहित की थी जिसे प्रभु ने पाँच विभिन्न स्रोतों में विभक्त कर दिया था। यह स्रोत 'ऊर्ध्व', 'पूर्व', 'उत्तर', 'पश्चिम', तथा 'दक्षिण', नाम से जगत् में सुप्रसिद्ध हैं। एक अत्यधिक प्राचीन ग्रन्थ 'कामिकागम' कहता है कि उमापति संहारकारी नीलकण्ठ महाराज ही अपने पाँच मुखों के कारण पाँच स्रोतों का प्रस्तुतीकरण करते हैं।

सम्पूर्ण तन्त्र साहित्य का पठन करने पर यह तथ्य पूर्ण रूपेण स्पष्ट हो जाता है कि देवाधिदेव महादेव ने ही समस्त तन्त्रों का प्रकाश किया था। इस तथ्यानुसार यह स्वीकार कर लेने में अतिशयोक्ति न होगी कि शिव ही पञ्च स्रोतों के दाता हैं क्योंकि शास्त्रों में शिव को पाँचमुखी भी कहा गया है और आद्य भगवती कालिका देवी की भाँति ही यह भी नरमुण्डों की माला धारण करते थे। सम्भवतः यही कारण है कि निष्कल शिवजी महाराज से सर्वप्रथम अवबोध रूपक ज्ञान नाद के रूप में प्रसारित किया जाता है। यही ज्ञान मृत्युलोक में आकरः तन्त्र साहित्य के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

माना जाता है कि हिमालय के दामाद और पार्वती की माँग को सिन्दूर से पूरित करने वाले कैलाशपति श्री शिव अपने पाँचों मुखों में एक-एक विशेषता रखते हैं–

प्रथम मुख लौकिक है।

द्वितीय मुख वैदिक है।

तृतीय मुख आध्यात्मिक है।

चतुर्थ मुख अतिमार्गी है तथा

पंचम मुख मंत्रात्मक है।

शिव जी के पांचों मुखों की पांचों विशेषताओं के कारण (५ x ५ = २५) समष्टि रूप में स्रोतों की गणना का कुल योग पच्चीस हो जाता है।

जगत् के प्रचलित तन्त्र पांच प्रकार से दृष्टि में आते हैं। इसी भाँति मन्त्रमयी तन्त्र भी पाँच प्रकार के दिखाई देते हैं। चूंकि शिव जी के पाँचों मुखों से गुप्त विद्याओं का प्रसारण होता है अतः प्रत्येक मुख के द्वारा कहे गये विषय-विशेष अपने आप में निम्नलिखित विशेषतायें रखते हैं–

–भगवान शिव ने अपने पूर्व दिशा वाले मुख से जो तथ्य प्रस्तुत किये थे, वह **'गारूड़ी तन्त्र'** कहलाते हैं। इस विद्या की सहायता से समस्त विषों का स्तम्भन हो जाता है।

–देवादिदेव महादेव ने अपने दक्षिण दिशा वाले मुख से जो विद्या प्रदान की थी वह **'भैरव तन्त्र'** कहलाती है। इस विद्या को प्रयोग करने से सभी शत्रुओं की हानि हुआ करती है।

–उमापति महेश ने उत्तर दिशा वाले मुख से जो ज्ञान गंगा प्रवाहित की थी उसके प्रयोग से वशीकरण की सिद्धि प्राप्त हुआ करती है।

–कैलाशपति भोले बाबा अपने पश्चिम दिशा वाले मुख से जो विशेष

ज्ञान प्रस्तुत करते है वह **'भूत तन्त्र'** कहलाते हैं। इस विद्या के प्रयोग से भूतादिक की सिद्धि एवं भूतों का निवारण किया जाता है।

—कर्पूर गौरं करुणावतारं महामृत्युञ्जय त्र्यम्बकजी अपने ऊर्ध्व दिशा वाले मुख से जो ज्ञान मयी मन्दाकिनी प्रवाहित करते हैं वह **'सिद्धान्तागम'** कहलाती है। इस ज्ञान के प्रयोगों को करने मात्र से ही मनुष्य को दुर्लभ वस्तु 'मोक्ष' की प्राप्ति होती है।

किसी भी गुप्त विद्या से सम्बन्धित कार्य करना अपने आप में एक चुनौती हुआ करता है। किसी भी पुस्तक में काट-छांट करना आधुनिक लेखक बन्धुओं को बहुत खूबी से आता है। मुझसे यह कार्य नहीं हो पाता। सम्भवतः यही कारण है कि मैं पुस्तकों का प्रस्तुतीकरण विलम्ब से करता हूँ क्योंकि मेरा सिद्धांत लेखक बनकर नाम व धन कमाना नहीं है बल्कि भारतीय पराविद्या जो कि लुप्त होती जा रही है और जिस विद्या के कारण ही भारत स्वर्ण काल भी कहलाता था और जिससे विदेशी विद्वान आकर्षित होकर मेरे पूजनीय सर्वदा वन्दीय भारत में आज भी चले आते हैं। ऐसी विशेष विद्या की अंधेरे से उजाले में लाकर आप तक पहुंचाना है क्योंकि यह विद्या प्राचीन ऋषियों की आपके लिए अमूल्य घरोहर है। एक दुर्बल पुरुष अपनी सौन्दर्यमयी स्त्री की रक्षा कर पाने में असमर्थ रहा करता है। इसी कारण अन्य कामुक लोग उसकी रूपसी का हरण करके ले जाते है। इसी भाँति यह सदा स्मरण रखें कि यदि आप मानसिक रूप से दुर्बल हैं तो यह विद्या आपके द्वारा लाभ उठाने की तो हो सकती है परन्तु प्रयोग करने के लिये बिल्कुल नहीं है। अतः प्रारम्भकाल में ही उचित निर्णय कर लेना चाहिए।

अहंकारिषु दुष्टेषु षापिष्ठषु जनेषु च।
प्रयोगैर्हव्यमानेषु दोषो नैव प्रजायते।।
योजयेदानिमित्तं यो आत्मबातो न संशय।

असन्तुष्ट प्रयोगे यः शास्त्रमेनन्न सिद्धिदम।।

अन्य लोगों का बुरा करने वाला, दुष्ट, दुराचारी, पापी लोगों का अहित करने पर कोई दोष नही होता। यदि प्रयोग की सफलता जानने हेतु ही किसी का अहित किया जाये तो साधक की हानि हुआ करती है। मुख्यतः अविश्वास के कारण सिद्धि नहीं मिला करती।

—और जिसे तन्त्र शास्त्र नहीं आता वह किसी के ऊपर कुपित होकर भला क्या कर लेगा और यदि वह तन्त्र शास्त्र पर अधिकार रखता है तो वह सूर्य को धरा पर ला सकता है, पर्वत को हिला सकता है और समुद्र को सुखा सकता है परन्तु इन सबके लिये साधक का मनोबल स्वच्छ एवं स्वस्थ होना अत्यधिक आवश्यक है।

गुप्त विद्या किसी विशेष सम्प्रदाय की विद्या नहीं है बल्कि आपकी अपनी विद्या है और यदि आप आज भी क्लेशित हैं तो मन्दाकिनी के किनारे बैठकर 'पानी-पानी' चिल्लाने से प्यास तो बुझेगी नहीं अपितु वह तो बढ़ेगी ही। गीता के कर्मयोग को स्वीकार करते हुए कर्म कीजिये। 'पानी-पानी' न चिल्लाते हुए जल का पान कीजिये और प्यास बुझाइए। इसी भाँति अपनी गुप्त विद्याओं में प्रवेश कीजिये और अपनी समस्याओं का निराकरण पाइये।

महर्षि बाल्मीकि के द्वारा लिखी गई रामायण से लेकर आज तक लोक कथाओं में राक्षसराज रावण का चरित्र बड़ा ही दूषित बनकर उभरा है परन्तु उसकी ज्ञान गंगा जिसके सहारे उसने सारा ब्रह्माण्ड मुठ्ठी में कैद कर रखा था वह कहाँ है ?

प्रस्तुत पुस्तक उड्डीश तन्त्र रावण का बनाया हुआ माना जाता है और मेरी दृष्टि में डामर तन्त्र, भूत डामर तन्त्रादि के प्रयोग इसमें अधिक कहे गये हैं अतः यह स्वीकार कर लेना होता कि रावण के काल में भी यह दुर्लभ तन्त्र प्रचारित थे। आश्चर्य तो इस बात से होता है कि यह

'उड्डीश तन्त्र', 'उड्डीश महातन्त्र', 'उड्डीश शास्त्र', 'रावणोड्डीश', 'वीर भद्र तन्त्र', 'रावणोड्डीश डामर तन्त्र सार', 'उड्डामर तन्त्र', तथा 'उड्डीशवीर तन्त्र', के नाम से भी हस्त लिखित प्राचीन ग्रन्थों में सुरक्षित हैं। इस तन्त्र के अनेकों प्रयोग 'कक्षपुटी', 'सर्वोल्लास तन्त्र', 'सिद्ध चामुण्डी तन्त्र' तथा 'तारा भक्ति सुधाणव तन्त्र' में वर्णित किये गये हैं।

मुख्यतः उड्डीश तन्त्र एक कौल तन्त्र है। इस तन्त्र में वशीकरण, आकर्षण, स्तम्भन, उच्चाटन, विद्वेषण, शान्तिक, पौष्टिक, अंधा, पागल, बहरा करने के प्रयोगों के साथ ही कीलन, कार्य स्तम्भन, जल स्तम्भन, देह संकोचन, गूंगा, भूत ज्वर, शस्त्रादि स्तम्भन, आपत्ति निवारण, साँपों को बुलाना, भूत चढ़ाना, फसल नष्ट करना, वृक्षादि नाश करना, मारण, गर्भ स्तम्भन तथा स्थापन करने के पूर्ण विधान तथा मन्त्रादि कहे गये हैं। इससे प्रतिपादित मन्त्रों का एकान्त में जप करना चाहिये तथा प्रयोग से सम्बन्धित देवी-देवताओं का ध्यान पूजार्चन करना चाहिए।

रावणोक्त उड्डीश तन्त्र तान्त्रिक चक्रों तथा यन्त्रों मन्त्रों से पूर्णतया विभूषित है और यह तन्त्र विविध प्रकार के टोने, टोटके, झाड़ फूँकादि औझाईगिरी के कार्यों का प्रतिपादन करता है।

इस ग्रन्थ के द्वारा मैं शास्त्रीय एवं प्रमाणिक प्राचीन तन्त्रों को प्रस्तुत करने का श्रीगणेश कर रहा हूँ। आशा है कि मेरा यह प्रयास आपको संतुष्ट करेगा।

यह सदा स्मरण रखना अनिवार्य है कि तन्त्र में सफलता की सिद्धि हेतु प्रथम आवश्यक शर्त 'गोपनीयता' की है अतः जो भी करें उसे अन्य किसी के समक्ष प्रस्तुत न करे। यदि किसी से बताना अनिवार्य भी हो तो अपने गुरु या गुरु भाईयों से कहें। इसके साथ ही द्वितीय शर्त यह है कि प्रयोग करने से प्रथम स्वयं को नाप तौल लें और गुरु की आज्ञा प्राप्त कर लें। गुरु का धारण करना इसलिये अनिवार्य होता है वह आपकी

आकांक्षाओं को अपने अनुभव की तुला पर तौलता है और आपके प्रयोग की त्रुटियों को दूर कर देता है।

प्रस्तुत पुस्तक की विषय सामग्री का शोध अनेक हिन्दी तथा बंगला ग्रंथों के प्रकाशित तथा अप्रकाशित ग्रंथों से लिया गया है। मेरा यह प्रयत्न रहा है कि इस पुस्तक को पूर्णतः निर्दोष बनाकर प्रस्तुत करूँ। आप यदि सन्तुष्ट हुए तो मेरी नहीं बल्कि महामाया की सफलता होगी।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनऽस्त्र समादधति सज्जनाः।।

आपको यदि इस प्रयास में कोई त्रुटि प्रतीत हो या इस सम्बन्ध में विशेष ज्ञान रखते हो तो मुझे प्रेषित करें, जिससे कि भविष्य में पुनः प्रकाशन होने पर विषय को और निर्दोष बनाकर पराज्ञान गंगा को प्रवाहित किया जा सके।

श्री यशपाल
संस्थापक एवं प्रबन्ध निर्देशक
तंज्योति गुह्य विद्या साधन एवं अनुसंधान केन्द्र,

❑❑❑

॥ ॐ ऐं ह्रीं क्रीं गुह्येश्वरी सिद्धि रूपायै नमः ॥

श्री लंकाधिपति रावण कृत

उड्डीश तन्त्र

ॐ अथ प्रथम पटल ॐ

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

सौम्येन्दीवर नीलनीरदघटा प्रोद्दाम् देहच्छटालास्यो-
न्माब निनाद मङ्गलचयंः श्रोव्यन्त वौलज्जटा,
सा काली करवाल काल कलना इन्त्वश्रियं चण्डिका।।

जिनके शरीर की छटा मेघों की तथा नीले कमलों की भाँति है, उन्मत्त भाव से मंगल ध्वनि पूर्वक नृत्य करती हैं और ऐसा करते समय जिनके नितम्ब प्रदेश पर उनकी लम्बी जटायें लहराती रहती हैं। ऐसी प्रचण्ड मूर्तिमयी काली अपना भीषण खड़ग घुमाते हुए हमारी अशुभताओं का अन्त करें।

काली क्रोध कराल काल भयदौन्माद प्रमोदालालया।
नेत्रोपान्त कृतान्तदैत्य निवहा प्रोद्दाम् देहाभया।।
पायाद् वे जय कालिका प्रवलिका हूंकार घोरानना।
भक्तानाम भयप्रदा विजयदा विश्वेश सिद्धासना।।

जो क्रोध के आवेश में काल का भय प्रदर्शित करती हुई भीषण रूप धारण करके हर्ष से उन्मत्त हो जाती है, जो कटाक्ष वाली दृष्टि से समूचे दैत्यों का नाश कर देती हैं, जिनकी मूर्ति तो भयप्रद है परन्तु अपने भक्तों को अभय देती हैं, जो जब 'हूं' की ध्वनि करती हैं तो उनका मुखमण्डल अति भीषण हो उठता है। जिनके कदमों के नीचे स्वयं ही शिवजी आसन

बनकर लेटे हैं। जो अपने भक्तों को अभय और विजय प्रदान करती हैं, ह
वहीं जगदम्बा भवानी माता काली हमारी रक्षा करें।

करालोन्मुखी कालिका भी मकान्ता।
कटि व्याघ्र चर्मावृता दानवान्ता।।
हूं हूं कड़ मड़ीं नादिनी कालिका।
तु प्रसन्ना सदा नः प्रसन्नान पुनातु।।

जो कटि प्रदेश में व्याघ्र चर्म को धारण करती हैं और उन्मत्त होकर कराल मुख से जो कि भीम कृष्ण कान्त मूर्ति के समान होता है, से हूँ हूँ कड़ मड़ का उच्चारण करते हुए दानवों के दलों का नाश कर देती हैं, वही आद्य भवानी कालिका देवी प्रसन्न होकर सदा सर्वदा हमें पवित्र रखें क्योंकि हम उन्हीं की शरणागत हैं।

॥ उड्डीश तन्त्रारम्भः ॥

कैंलासे शिखरे रम्ये, नानारत्नोपशोभिते।
नाना द्रुमलाताकोर्णे नानापक्षिरवैर्युते।।

कैलाश पर्वत के शिखर के ऊपर अनेकानेक रत्नादि शोभित हो रहे है। यहाँ की वृक्ष व लतायें हैं जिनके ऊपर विभिन्न प्रकार के पक्षी अपने-अपने कष्टों से मधुर स्वर का उच्चारण कर रहे हैं।

सर्वर्तुः कुसुमामोदं मोदिते सुमनोहरं।
शैत्यसौगन्ध्यमन्दाढयैर्मरुद्भिरुपवीजिते ।।

यहाँ पर सभी ऋतुएं अपने-अपने फूलों एवं फलों से युक्त होकर शोभायमान हो रही हैं एवम् सुगन्धित शीतल वायु शनैः शनैः प्रवाहित

हो रही है।

अप्सरो गणसंगीत कलध्वनि निनादिते।
स्थिरच्छायद्रुमच्छायाच्छादिते स्निग्ध मंजुले।।

यहाँ के वृक्षों की ठण्डी तथा सुखद छाया के नीचे अप्सराओं का समूह संगीत की समधुर स्वर लहरियों के साथ मगन होकर गायन कर रहा है।

मत्तकोकिलसंदोह संघुष्टविपिनान्तरे।
सर्वदा स्वगर्णः सार्ध ऋतुराजनिषेविते।।

यहाँ पर कोयल नामक पक्षी अपने समूह के साथ 'कुइ' 'कुइ' कर रही है और यहीं पर ऋतुराज बसन्त अपने गणों के साथ निवास कर रहा है।

उड्डीश तन्त्र का शुभारम्भ कैलाश पर्वत और उसकी अवर्णनीय शोभा के साथ होता है जबकि विद्वत्‌गण इस विषय में नेति नेति कहकर चुप हो जाते हैं। इस पर भी रावण और शिव के सम्वाद रूपी इस तन्त्र को रावण कृत अर्थात् रावण के द्वारा कहा गया या लिखा गया उड्डीश तन्त्र कहने वाला प्राचीन लेखक अज्ञात है। यह समझ में नहीं आता कि उड्डीश तन्त्र को रावण कृत क्यों कहा गया क्योंकि इस तन्त्र में जो भी विषय कहे गये है वह सभी इस तन्त्र के निर्माण काल से बहुत पहले पाये जाने वाले 'भूत डामर तन्त्र', 'तोडल तन्त्र' तथा 'डामर तन्त्रादि' में भरे पड़े हैं। दूसरे शब्दों में कहा जये तो यह तन्त्र अपने आप में कोई स्वतन्त्र तन्त्र नहीं है। इसी तन्त्र की बात क्या कहें और भी अनेक तन्त्र अपने-अपने शीर्षकों के साथ पाठ्कों के तथा साधकों के मनोमस्तिष्क के आकाशीय क्षितिज पर सफलता के साथ पताका के रूप में स्थित है। इस पर भी यह तो कहा जा सकता है कि चाहे जो भी हो इस तन्त्र की

अपनी ही एक अलग विशेषता है।

कैलाश पर्वत !

१६०० मील लम्बा तथा २०० मील चौड़ा भारत माता का मुकु कहलाने वाल हिमालय पौराणिक काल से अपनी विशेषता रखता आ र है। यही वह हिमालय है जिसके एक सुमधुर हिस्से पर मोहित होकर शिव अपनी अर्द्धांगिनी पार्वती के साथ १४ लोकों को छोड़कर आये और अप निवास स्थान बनाया। ऐसे स्थान की शोभा का वर्णन भला कौन कर सक है। इस स्थान की तो छोड़िये ताजमहल की सुनिये कि उसकी अनुप शोभा के विषय में कोई क्या लिख सकता है, सम्भवतः इसी कारण उ एक दर्शनीय स्थान कहकर मौन साध लिया जाता है। अब अगर कैला लोक या कैलाश पर्वत की बात करें तो ऋषि मुनि **'न शक्येत वर्णपि गिरा'** कहकर प्रशंसित नेत्रों से अविचल देखते रह जाते हैं परन्तु कह कुछ भी नहीं। इस लोक की विशेषता से प्रभावित होकर ही प्रभु को पा के लिए प्रेमी लोग हिमालय की तरफ आकर्षित होते हैं।

कैलाश पर्वत के विषय में केवल यही कहा जा सकता है कि ए होनहार शिशु पहले मिट्टी को मूर्ति बना करके उसके साथ प्रेम करने ल जाता हैं, इसी भाँति परमपिता परवेश्वर भी अपने खिलौने हिमालय वे साथ प्रेम करता है और यही कारण है कि हिमालय आज भी अवर्णनीय सुन्दरता का घर है।

श्रीयुत, उर्जित, गिरि भृंग है। सदा एकरस, तेजस्वी, दृढ़प्रतिज्ञ, चित्त में काव्य का जन्म दे दने वाला, स्फूर्ति का दाता भारत की धवल कीर्ति के स्वरूप उज्ज्वल हिमालय पर्वतराज पर ही कैलाश लोक है जहाँ की शोभा का गायन किया गया है।

सिद्धचारण गन्धर्वैगाणपत्यगणैर्वृते।
तत्र मौनधरं देवं चराचरजगद्गुरुम्।।

यहाँ पर सिद्ध, आचरण, गन्धर्व, गणेश, कार्तिकेयादि अपने-अपने गणों के साथ निवास कर रहे हैं और जगदगुरु-श्री शिवजी मौन को धारण करके यहाँ पर बैठे हुए हैं।

सदाशिवं सदानन्दं करुणाऽमृतसागरम्।
कर्पूरकुन्दधवलं शुद्धं सत्वगुणमयं विभुम्।।

यह शिवजी सदा कल्याण करने वाले हैं सदा आनन्द का दान देने वाले हैं, करुणामयी हैं, अमृत के सागर हैं। इनकी देह का वर्ण कर्पूर तथा कुन्द पुष्प के समान उज्जवल है और यह देव पवित्र एवं सत्व गुण प्रधान है।

दिगम्बरं दीनानाथं योगीन्द्रं योगिवल्लभम्।
गंगाशीकर संसिक्तंजटामण्डल मण्डितम्।।

ये विवस्त्र हैं। ये दीनों के नाथ हैं। ये योगिनों में सर्वश्रेष्ठ योगी हैं और योगियों को यह बहुत प्रिय हैं। इनके सिर की जटायें गंगा के जल से सदा भीगी रहती हैं।

विभूतिभूषितं शान्तं व्यालमालं कपालिनम्।
त्रिलोचनं त्रिलोकेशं त्रिशूलवरधारिणम्।।

ये विभूति को धारण करके मुण्डों की तथा सर्पों की माला पहनते हैं और सदा शान्त रहते हैं। ये तीनों लोकों के कर्त्ता हैं। ये त्रिशूल को रखते है तथा इनके तीन नेत्र हैं।

आशुतोषं ज्ञानमयं कैवल्यफजदायकम् ।
निरातंकं निर्विकल्पं निर्विशेषं निरंजनम् ।।

ये शीघ्रतिशीघ्र प्रसन्न होते हैं तथा ये ज्ञान के भण्डार है। ये मुक्ति देने वाले हैं। ये अन्तहीन हैं। ये कल्पना से भी परे हैं। ये अविशेष निरन्जन हैं।

सर्वेषा हितकारम् देवदेवं निरामयम् ।
अर्द्धचन्द्रोज्ज्वलद्भालं पञ्चवक्त्रं सुभूषितम् ।।

ये सभी का हित करते हैं। ये निरामय हैं तथा देवताओं के भी देव हैं। इनके माथे पर आधा चन्द्रमा देदीप्यमान है तथा ये सुन्दर आभूषणों से युक्त पाँच मुख वाले हैं।

शिव !

सम्पूर्ण कल्याण के दाता जो कि शक्ति देवी को अपने बांये रखते हैं अर्थात् पार्वती जिनकी पत्नी हैं और जो त्रिशूल रखते हैं, उन्हें शिव कहते हैं।

इष्ट कहते है अभिलाषा को। अभिलाषा अर्थात् मनोरथ। यह मनोरथ शब्द जगत् के प्रत्येक जीव को अत्यधिक प्रिय है क्योंकि मनोरथ है तो क्रिया है और यदि मनोरथ नहीं तो क्रिया भी नहीं है। यह व्यक्ति के मनोरथ ही थे कि क्षितिज का हृदय बींधते हुए चन्द्रमा तक जा पहुंचे।

दूसरे शब्दों में कहा जाये तो मनोरथ ही जिन्दगी है।

इस मनोरथ शब्द को व्याकरण की दृष्टि से देखा जाये तो मालूम होता है कि मनोरथ शब्द मनसरथ शब्द से बना है। मनसरथ शब्द के 'स' अक्षर

को 'रु' करते हैं और इस स्थान पर 'हशिव' पाणिनीय सूत्र से 'उ' करके पूर्व के स्थान में गुणा कर देते हैं तो 'मनोरथ' शब्द बन जाता है। यह सत्य एवं प्राचीन मान्यता है कि **'शिव बिना सिध्यति किं मनोरथा'** अतः शिव शब्द के उकार के **'उकारः शंकरः प्रोक्तः'** मनोरथ शब्द की सिद्धि नहीं हो सकती। इस पर फिर कहा गया है कि **'शंकरोति शंकरः'** अर्थात् जो 'शं' कल्याण करता है वही शंकर है। अतः स्पष्ट हो जाता है कि शिव की कृपा के अभाव में मनोरथ अर्थात् अभीष्ट की प्राप्ति नहीं हो पाती।

मनुष्य देह का परम पुरुषार्थ मोक्ष साधन है अतः **'ज्ञानाद्धते न मोक्षः** अर्थात् बिना ज्ञान के मोक्ष नहीं और उस मोक्ष के दिलाने वाले ज्ञान के दाता भी शिव हैं क्योंकि बिना शिक्षा प्राप्त किये पढ़ना लिखना नहीं आता। यही कारण है कि बिना विद्या के ज्ञान की उपलब्धि नहीं हो पाती।

ऐसे शिवजी की विशेषता का यहाँ वर्णन किया गया है।

प्रसन्नवदनं वीक्ष्य लोकानां हितकाम्यया।
विनयेन समायुक्तो रावणः शिवमब्रवतीत्।।

शिवजी को प्रसन्न देखकर संसार का हित चाहने वाले और संसार के हित की कामना से वशीभूत होकर रावण ने सविनय पूर्वक शिवजी से पूछा—

संसार के हित की कामना या संसार का हित चाहने वाले रावण शब्द से सम्भवतः अनेक विद्वत्जन सन्धि न करे क्योंकि रामायण का पठन करने के पश्चात् रावण के लिए यह शब्द युक्तियुक्त प्रतीत नहीं होते परन्तु मैं यह कहूँगा कि यह शब्द रावण के लिए कभी स्वर्ण की भाँति पूर्णतः खरे थे और यह वह काल था जब रावण सिद्धियाँ प्राप्त कर रहा था। जब उसने अनेक सिद्धियाँ प्राप्त कर लीं तब कहीं उसमें अभिमान का प्रकाश हुआ था और क्रमशः वह ऐसा होता गया कि वह इन शब्दों के भी योग्य

नहीं रहा परन्तु यह वास्तविकता है कि उसमें जगत् हित की इच्छा थी। केवल प्रभु माया के वशीभूत होकर वह शुक्र (काम) से मात खा गया क्योंकि उसने सभी पर तो विजय प्राप्त कर ली थी परन्तु काम उससे स्वतन्त्र ही बच गया था।

॥ रावण उवाचः ॥

नमस्ते देव देवेश सदाशिव जगद्गुरो।
तन्त्रविद्यां क्षणं सिद्धिं कथयस्व मम प्रभो।।

रावण ने कहा—हे देवों के भी देव, सदाशिव, जगत् के गुरु, आपको नमस्कार है। प्रभु ! क्षणों में ही सिद्ध हो जाने वाली तन्त्र विद्या के विषय में प्रकाश करें।

॥ महादेव उवाचः ॥

आधु पृष्टं त्वा वत्स लोकानां हितकाम्यया।
उड्डीशाख्यमिदं तन्त्र कथयामि तवाग्रतः।।

शिवजी ने कहा—तुमने जगत् के हितार्थ यह प्रश्न किया है अतः मैं तुम्हें **'उड्डीश तन्त्र'** नामक ज्ञान बताऊंगा।

पुस्तके लिखिता विद्या नैव सिद्धिप्रदा नृणाम।
गुरुं बिना हिशास्त्रेऽस्मिनूनाधिकारःकथञ्चन।।

पुस्तक मे कहे गये प्रयोग गुरु के अभाव में सिद्धि प्रदान नहीं करते। गुरु के बिना किसी भी तन्त्र शास्त्र पर किसी का भी अधिकार नहीं हो सकता।

अथाभिध्यास्येशास्त्रेऽस्मिन्सम्यक्षट्कर्मलक्षणम् ।
तन्मन्त्रानुसारेण प्रयोगफलसिद्धिदेम् ।।

सर्वप्रथम इस तन्त्र शास्त्र में षटकर्मों के लक्षण बता रहा हूं जो कि तन्त्र मन्त्रज्ञों[1] के अनुसार प्रयोग में सफलता के दाता होते हैं।

शान्तिवश्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटनं तथा।
मारणं तानि शंसन्ति षट् कर्माणिमनीषिणः ।।

शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण नामक षटकर्म हमारे मुनियों ने बताए हैं।

रो गकृत्या गृहादीनां निराशः शान्तिरीरिता।
वश्यं जनानां सर्वेषां विधेयत्वमुदीरितम् ।।

जिस प्रयोग के द्वारा रोगों की तथा ग्रहों की शान्ति की जाए और निराशा आदि का नाश किया जाए उसे शान्ति कर्म कहते हैं।

जिस प्रयोग को करने से सभी लोग वशीभूत होते हैं उसे वशीकरण कहते हैं।

प्रवृत्तिरोधः सर्वेषां स्तम्भनं समुदाहृतम् ।
स्निग्धानां द्वेषभावं मिथो विद्वेषणं मतम् ।।

जिस प्रयोग को करने से गतिरोध प्रस्तुत किया जाए उसे स्तम्भन कहते हैं। प्रयोग के करने से दो व्यक्तियों के मनोभावों में विपरीतता प्रस्तुत कर दी जाए उसे विद्वेषण कहते हैं।

उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम् ।
प्राणिनां प्राणहरणं मारणं समुदाहृतम् ।।

१—तन्त्र मन्त्रों के विशारद। —श्री यशपाल जी।

जिस प्रयोग को करने से कोई व्यक्ति अपना गांव, नगर या देश छोड़क
अन्य स्थल पर चला जाए उसे उच्चाटन कहते हैं।

चारों दिशाओं में दृष्टिगोचर होने वाली सृष्टि के निर्माता का अपन
अस्तित्व, आत्मा का नित्यत्व, पुनर्जन्म जैसी महत्वपूर्ण विशेषता का औ
वेदों को प्रामाणिकता का असीम सौरभ निःसन्देह सृष्टिके कण-कण व
विशेषता प्रदान करता है।

जबसे सृष्टि बनी नियति ने इसे बारम्बार झकझोरा हैं जैसे गहन निद्र
में व्याप्त व्यक्ति जब सरलता से जागता नहीं है तो जगाने वाला उ
झकझोर देता है। इस क्रिया के परिणामस्वरूप व्यक्ति तो जग जाता
परन्तु जगते समय अपने टूटे हुए मीठे से स्वप्न के पूर्ण न हो पाने व
कारण अनमनस्क सा रहता है। ठीक इसी भांति से नियति के कालचक्र
के प्रभाव ने सृष्टि को झकझोर दिया जिस कारण सांस्कृतिक परम्पराअ
को गर्व है कि उसके नागरिकों के स्वस्थ चिन्तन ने प्राचीन मूल तत्व क
आज भी अमरता के अमिट अक्षरों से प्रस्तुत करके जीवित रखा है।

यही कारण है कि विश्व की संस्कृति और सभ्यता का जो भी हुआ
हो, हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता विश्व को एक सर्वश्रेष्ठ उपहार
है क्योंकि यह आज भी प्रतिष्ठित है और सम्पूर्ण विश्व के कोने-कोने स
जिज्ञासु हमारे वहां आकर पूर्णतः संतुष्ट होकर जाते हैं।

इसी विशेषता की एक अनमोल कड़ी है तन्त्र।

हमारे भारतीय वाङ्मय में युगों युगान्तर की अनुभूत जिस बहुमुखी
आध्यामित्मक साधना का विराट स्वरूप हृदयंगम करने का सौभाग्य प्राप्त
होता है और जिससे प्रेरित होकर सन्मार्ग ग्रहण करने वाले को समस्त ऐहिक
तथा पारलौकिक कामनायें निश्चय ही पूर्ण होकर आनन्द की प्राप्ति होती

है उसे तन्त्र कहते हैं। इसी विशेषता के कारण तन्त्र को तन्त्र कल्पतरू कहा जाता है। प्रस्तुत तन्त्र में कुछ ऐसा है जिसके करने से व्यक्ति अपनी समस्या का निराकरण कर लेता है।

तन्त्र शब्द के अनेकानेक अर्थ प्रयोग होते हैं परन्तु वास्तव में तन्त्र शब्द को कशिकावृत्ति में तन धातु विस्तारे से बनता है जिसका मूलतः अर्थ तनस्त्रन अर्थात् विस्तार है। अतः जिससे ज्ञान का विस्तार हो या जो विधि ज्ञान को बढ़ाती है वह तन्त्र है। तन्त्र शब्द में त्र शब्द त्राण का सूचक है। त्राण अर्थात् रक्षा अतः तन्त्र शब्द का अर्थ हुआ जिसके द्वारा रक्षा प्राप्त हो। ऐसा ज्ञान और जो ज्ञान अपने आप में विशेषता रखता है उसे कहते हैं विज्ञान। इसी कारण हमारा तन्त्र एक जीता जागता विज्ञान है जो कल (भूतकाल) था, जो आज (वर्तमान काल) है और जो कल (भविष्य काल) रहेगा।

हमारे आधुनिक विज्ञान ने बहुत कुछ दिया और फिर पद्धतियां बदल दी परन्तु हमारे तन्त्र ने इतना दिया जिसे आज भी बदला नहीं गया और जो कम नहीं हुआ।

रावण कृत उड्डीश तन्त्र अपने आप में स्वतन्त्र ग्रन्थ न होकर अन्य तन्त्रों का केवल अंग मात्र ही है। इसमें यामलादि तथा डामरादि के प्रयोग ही पुनः वर्णित हुए हैं।

रावण के निवेदन करने पर भी आदि गुरु शिवजी ने तन्त्र के शुभारम्भ में षडकर्म कहे है।

देह को लगे रोग, शोक, क्लेश तथा उन्मादि रोग का निवारण करके देह को स्वस्थ सबल बना शांति कर्म कहलाता है। उन्मादि रोग में ही भूत

प्रेतादि के दोष आते है। विशेष वर्णन मेरी पुस्तक 'तन्त्र प्रयोग' में स्पष्टता के साथ मिलेगा, उसका अवलोकन करें।

कुछ इस भाँति के प्रयोग होते है जिसे करने से दूसरा व्यक्ति न चाहते हुए भी मिले, बात करे और न चाहते हुए भी प्रेम तथा विलासिता को प्राप्त हो। ऐसे प्रयोगों को वशीकरण कहते हैं।

स्तम्भन प्रयोग के द्वारा गति रोकी जाती है। गति का स्पष्ट सा अर्थ होता है हरकत। अभिप्राय यही है कि कोई चलता हुआ जीव बिना कारण रुक जाए और चाहते हुए भी आगे या पीछे न जा सके।

गर्भवती का गिरता हुआ गर्भ। चलता हुआ संयंत्र रुक जाए अर्थात् सभी गति रुक जाए यहां तक कि विषय भोग करते हुए दोनों प्राणी जैसे के तैसे रुक जायें (क्षमा करें ! ऐसा प्रयोग मैं प्रस्तुत नहीं करुँगा हालांकि तन्त्र प्रयोग में भूल से चला गया था परन्तु प्रकाशक की तीव्र बुद्धि के कारण वह प्रकाशित नहीं हुआ। इसके लिए प्रकाशक का आभारी हूँ)।

दो दिलों या वस्तुओं को परस्पर लड़वा या टकरा देना विद्वेषण कहलाता है। इस प्रयोग के करने से दूर पड़े हुए दो बर्तन स्वयं ही टकराते हैं और दो प्रेमी न चाहते हुए भी एक दूसरे से नफरत करने लग जाते हैं।

तन्त्रों में उच्चाटन नामक प्रयोग करने से केन्द्रित व्यक्ति जब तक अपने रहने वाले नगर को त्याग कर अन्यत्र नहीं चला जाता तब तक वह व्यथित रहता है और शीघ्र ही पलायन कर जाता है।

मारण शब्द स्पष्ट ही मृत्यु का सूचक है। इस प्रयोग के द्वारा केन्द्रित व्यक्ति के प्राण लिये जा सकते हैं।

॥ अथ अध्याय वर्णनम् ॥

ग्रन्थेऽस्मिन् कपणं चादौ द्वितीयोन्मादनं तथा।
विद्वषेणं तृतीये च चतुर्थोच्चाटनं तथा।।
ग्रामकस्योच्चाटनं पंच जलस्तम्भश्च षष्ठकम्।
स्तम्भनं सप्तकं चैव वाजीकरणमष्टमम्।।
अन्यानपि प्रयोगांश्च बहून्शृण्वसुराधिप।
अन्धी भावो मूक भाबो गात्रसंकोचनं तथा।।

हे राक्षसों के राजा रावण ! इस ग्रन्थ में सर्वप्रथम आकर्षण, दूसरे अध्याय में उन्माद, तीसरे अध्याय में विद्वेषण, चौथे अध्याय में उच्चाटन तथा पाँचवें अध्याय में गाँव का ही उच्चाटन कहता हूँ। छठे अध्याय में जल का स्तम्भन, सातवें अध्याय में स्तम्भन तथा आठवें अध्याय में बाजीकरण तथा अन्धा करने की कला, बहरा तथा गूंगा करने की माया के साथ ही साथ अंगों का संकोचन करने की कला प्रस्तुत करता हूँ।

यहाँ पर कुछ नवीनतायें प्रस्तुत हैं परन्तु कुछ शब्द अपना अर्थ नहीं समझाते क्योंकि साधारण पाठक इन शब्दों से परिचित नहीं होता हे।

॥ बाजीकरणम् ॥

बलेननारी परितोषमेति नहीनवीर्यस्य कदापिसौख्यम्।
अतौ बलार्थ रति लम्पटस्य बाजीविधानं।।

अर्थात् पूर्ण बलशाली पुरुष से विषय भोग में स्त्री संतुष्ट होती है परन्तु हीनवीर्य होने के कारण दुर्बल पुरुष से स्त्री कभी भी संतुष्ट नहीं हुआ करती अतः ऐसे लोगों के लिए बाजीकरण कहा जाता है।

इस श्लोकानुसार यही स्पष्ट होता है कि बाजीकरण वाले प्रकरण विशेष में वीर्य बढ़ाने और विषयभोग में स्त्री को संतुष्ट करने की गोपनीय बातें वर्णित होंगी।

॥ अंगों का संकोचन ॥

प्रौढाङ्गनायानवसूतिकायाःश्लथवरांगनसुखाययूनाम।
तस्मान्नरैर्भेषजतोविधेयागाढी क्रियामन्मथमंदिरस्य।।

अर्थात् प्रौढ़ा स्त्री, नवीन स्त्री जिसने जचगी की हो इनका वराँग अर्थात् गुप्त स्थल शिथिल हो जाता है जिसके कारण विषयभोग करते हुए पुरुष को आनन्दानुभूति नहीं हो पाती अतः इस गुप्त स्थल को संकीर्ण करना चाहिये।

॥ प्रयोग विवरणिका ॥

बधिरोमूककरणे भूतज्वरकरं तथा।
मेघानां स्तम्भनं चैव दध्यादिकविनाशम्।।
मत्तोन्मत्तकरं चैव गजवाजि प्रोपनम्।
आकर्षणं भुजंगानां माववानां तथैव च।।
सस्यादि नाशनं चैव प रग्रामप्रवेशनम्।
बेतालादिकसिद्धिञ्ज पादुकाञ्जनसिद्धयः।।

इस ग्रंथ में बहिरा बना देना, मूर्ख बना देना, भूत लगा देना, ज्वर चढ़ा देना, बुद्धि का स्तम्भन करना, दही को नष्ट कर देना, पागल बनाना, हाथी-घोड़ा को कुपित कर देना, सर्प एवं मनुष्य को बुलाना, खेतों आदि का नष्ट करना, दूसरे के ग्राम में प्रवेश करना, अतिरिक्त भूतादिकों की

सिद्धि, पादुका सिद्धि एवं नेत्र के अञ्जन आदि की सिद्धि वर्णित है।

कोतुकं चेन्द्रजालं च यक्षिणी-मन्त्र-साधनम्।
गुटिका खेचरत्वं च मृतसंजीवनादिकम्।।
अन्यान् बइंस्तथा रोद्रान् वियामन्त्रांस्थतापरम्।
औषधं च तथा गुप्तं कार्यवक्ष्यामि यत्नतः।।
उड्डीश यो न जानाति स रुष्टः किं करिष्यति।
मेरुं चालयते स्थानात् सागरे प्लावयेन्महीम्।।

इन्द्रजाल की क्रीड़ा, यक्षिणी साधन, गुटिका साधन, आकाश गमन करना, मरे हुए को जिलाना अतिरिक्त और भी भयंकर विद्याओं, उत्तम मन्त्रों एवं उत्तम औषधियों तथा गुप्त कार्यों का वर्णन करूंगा। जो मेरे कहे हुए उस उड्डीश तन्त्र को नहीं जानता वह क्रोधित होकर क्या कर सकता है ? यह उड्डीश तन्त्र सुमेरु पर्वत को हिला देने वाला तथा पृथ्वी को सागर में डुबा देने वाला है।

अकुलीनोऽधमोऽबुद्धिर्भक्तिहीनः क्षुधान्वितः।
मोहितः शंकितश्चापि निन्दकश्च विशेषतः।।
अभक्ताय न दातव्यं तन्त्र शास्त्रमनुत्तमम्।
तथैतैः सह संयोगे कार्य नोड्डीशकीध्रुवम्।।

वह विद्या नीच कुलीत्पन्न को, पापों को, मूर्ख को, भक्ति हीन को, दरिद्र को, मोह में फंसे हुए को, शंकित चित्त वाले को और विशेष करके निन्दा करने वाले प्राणी को कदापि न देनी चाहिए क्योंकि इनसे उड्डीश तन्त्र की क्रिया नहीं हो सकती है। फिर सिद्धि तथा फल तो दूर की बात है।

यदि रक्षेत् सिद्धिमेतामात्मानं तु तथैव च।
देवतागुरुभक्ताय वातव्यं सज्जनाय च।।
तपस्वीबालवृद्धानां तथा चैवोपकारिणाम्।
निश्चितं सुमतिं प्राप्य यथोक्तं भाषितानि च।।

यदि इस विद्या की प्रतिष्ठा एवं अपनी आत्मा की रक्षा करना च तो देवता व गुरु-भक्त, सज्जन, बालक, तपस्वी, वृद्ध, उपकारी तथा सुम वाले विद्वान के प्राप्त होने पर ही उन्हें यह विद्या प्रदान करे। इसी में इ शास्त्र की प्रतिष्ठा है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं नियमो नास्ति वासरः।
न व्रतं नियमो होमः कालवेला विवजितम्।।
केवलं तन्त्र मात्रेण ह्योषधी सिद्धिरूपिणी।
यस्य साधनमात्रेण क्षणत् सिद्धिश्च जायते।।

इस विद्या के प्रयोग में तिथि, वार, नक्षत्र, व्रत, होम काल वेला आ का विचार नहीं किया जाता। केवल तन्त्र के ही बल से औषधियाँ सि प्रदान करने वाली होती हैं जिसका साधन करने से क्षण मात्र में ही सि प्राप्त हो जाती है।

शशि हीना यथा रात्रो रविहीनं यथा दिनम्।
नृपहीनं यथा राज्यँ गुरुहीनं च मन्त्रकन्।।

जैसे चन्द्रमा से हीन रात्रि, सूर्य से हीन दिवस तथा राजा से हीन रा सुखकर नहीं होता, उसी प्रकार गुरु से हीन शिष्य तथा मन्त्र भी सुख त फल देने वाला नहीं होता। अतः गुरु की अत्यन्त आवश्यकता समझ चाहिए।

इन्द्रस्य च यथा वज्रं पाशश्च वरुणस्य च।
यमस्य च यथा दण्डो वह्नेशक्तिर्यथा दहेत्।।

जैसे इन्द्र का वज्र दैत्यों का विनाशक है, वरूण के पास महा बलवानो को भी बाधक है। जैसा यमराज का दण्ड सबको दण्डित करता है अग्निदेव सबको भस्म करने की शक्ति रखते हैं।

तथैते महायोगाः प्रयोज्याः क्षेम कर्मणि।
सूर्य प्रपातयेत् भूमौ नेदं मिथ्या भविष्यति।।

उसी प्रकार इस शास्त्र में विहित प्रयोग भी शक्ति रखते है। यह असत्य नहीं है, कहाँ तक कहा जाये—इन मन्त्रों की शक्ति तो ऐसी है कि सूर्य को पृथ्वी पर बुला ले।

अपकारिषु दुष्टेषु पापिष्ठेषु जनेषु च।
प्रयोगैर्हन्यमानेषु दोषो नैव प्रजायते।।
योजयेदनिमितँ यो आत्मघाती न संशयः।
असन्तुष्टः प्रयोगे यःशास्त्रमेनन्न सिद्धिदम।।

उपकारी, दुष्ट, दुराचारी, पापी ऐसे व्यक्तियों पर यदि मारण का प्रयोग करे तो कोई दोष नहीं है। यदि बिना प्रयोजन किसी पर मारण का प्रयोग किया जाए तो अपना ही नाश हो जाता है जो इस तन्त्र शास्त्र पर नहीं करते उनको सिद्धि कभी नहीं मिलती है।

॥ दुश्मन को मारने का प्रयोग ॥

अथातः सम्प्रक्ष्यामि प्रयोगं मारणाभिवम्।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां श्रृणु रावण यत्नतः।।

हे रावण ! अब मै तुमसे मारण प्रयोग कहता हूं जो कि मनुष्य पा
अपने शीघ्र ही प्रभाव स्पष्ट करता है।

मारणं न वृथा कार्य यस्य कस्य कदाचन।
प्राणान्त संकटे जाते कर्त्तव्यं भूतिमिछता।।

यह प्रयोग जिस किसी की थोडी सी गलती कर देने पर नही करन
चाहिए। मारण प्रयोग तब ही किसी पर करे जब यह प्रमाणित हो जा
कि वह हमको जान से मार ही डालेगा।

तस्माद्रक्ष्यं सदात्मानं मारणं न क्वचिच्चरेत्।
मुर्खेण तु कृते तन्त्रे स्वस्मिन्नेव समापयेत्।।

मूर्ख का किया गया प्रयोग कर्त्ता को ही नष्ट कर देता है अतः अपन
देह तथा आत्मा की रक्षा चाहने वाला व्यक्ति मारण का प्रयोग कभी
करे, क्योंकि इसमे अपने प्रााण जाने का खतरा सर्वदा बना रहता है।

ब्रह्मात्मानं तुं विपपं दृष्ट्रवा विज्ञानचक्षुषा।
सर्वत्र मारणं कार्य मन्यथा दोष भाग्भवेत्।।
कर्त्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत्।।

जो व्यक्ति अपने ज्ञान की दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व को एक सा देख
वाला है तथा प्रत्येक जीवात्मा को ब्रह्मा के ही समान समझता है, वह संक
की स्थिति उत्पन्न होने पर मारण का प्रयोग कर सकता है। यदि दूस
कोई मारण प्रयोग करेगा तो मारण के दोष का भागी होगा। यदि कभ
मजबूरी में मारण का प्रयोग करना ही पड़े तो नीचे लिखे नियमों के अनुस
ही करें।

॥ मारण प्रयोग ॥

रिपुपादतलात्पांसु गृहीत्वा पुत्तलीं कुरु।
चिताभस्मसमायुक्तं मध्यमारुधिरान्वितम्।।

शत्रु के पैर के नीचे की मृत्तिका तथा श्मशान से चिता की भस्म एवं ध्यमा अंगुली का रक्त मिलाकर एक पुतली (मूर्ति) बनावें।

कृष्णवस्त्रेण संवेष्टय कृष्णसूत्रेण बन्धयेत्।
कुशासने स्वापयेत् मूर्ति दीपं प्रज्ज्वालयेत्ततः।।

और उस मूर्ति को काले कपड़े में लपेटें तथा एक काले डोरे से उसे ांधकर कुशासन पर सुला दें और एक दीपक जलावें।

अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं पश्चादटोत्तर शतम्।
मन्त्रराजप्रभावेण माषांश्चाष्टोत्तरं शतम्।।

इसके बाद मारण मन्त्र का दस हजार जप करे। १०८ उड़द के दाने कर प्रति दाने को मारण मन्त्र से अभिमन्त्रित करे।

पुत्तलीमुखमध्ये तु निक्षिपेत् सर्वमाषकान्।
अर्धरात्रि कृते योगे शक्रतुल्योऽपि मारयेत्।।

फिर उस पुतली के मुख में उन उड़द के दानों को डाल दे। अर्धरात्रि के समय इस प्रयोग को करने से यदि इन्द्र तुल्य शत्रु भी हो तो भी मारा जाता है।

प्रातः काले तु पुत्तलिकां श्मशाने च विनिक्षिपेत्।
मासाल्पकप्रयोगेण रिपोर्मृत्युर्भविष्यति।।

रात्रि में उक्त प्रयोग को करके प्रातःकाल में उस मूर्ति की श्म
में गाड़ दें। इस प्रकार बराबर एक माह तक इस प्रयोग को करते
से निश्चित ही शत्रु की अक्समात मृत्यु हो जाती है।

मारणमन्त्र–“ओं नमः कालसंहाराय अमुकं हन हन क्रीं फट भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।”

॥ प्रेत लगाने का प्रयोग ॥

निम्बकाष्टं सामादाय चतुरंगुलमावतः।
शत्रुकेशान् समालिप्य ततो नाम समालिखेत्।।
चितांगारे च तन्नाम्ना धूपं दयात् समाहितः।
त्रिरात्रं सप्तरात्रं वा यस्य नाम उदाहृतम्।।
कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां चाष्टोतरशतं जपेत्।
प्रतोगृहूणाति तच्छीघ्रां मन्त्रेणानेन मन्त्रवित्।।

प्रत्येक प्रयोग में जहां अमुक शब्द आवे वहाँ शत्रु का नाम लेता जा
चार अंगुली लम्बी एक नीम की लकड़ी लेकर उसमें शत्रु के सिर का
लपेटे और उसी से शत्रु का नाम लिखें। फिर पूर्ण सावधानी से उस
नाम से चिता के अंगार पर धूप देवें। इस प्रकार तीन या सात रात्रि
करने से शत्रु को प्रेत पकड़ लेता है। प्रयोग करने वाला व्यक्ति कृष्ण
की अष्टमी को प्रयोग आरम्भ करे तथा चतुर्दशी तक समाप्त कर दे
निम्नलिखत मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जपे।

मन्त्र–“ओं नमो भगवते भूताधिपतये विरू पाक्षाय घारेर्दष्ट्रि विकरालिने ग्रहयक्षभूतेनानेन शंकर अमुकं हन हन दह दह पच

ृहण गृहण हुं फट् स्वाहा ठः ठः[१]।।"

॥ शत्रु परिवार सहित नाश हो ॥

नरास्थिकीलकं पुष्ये गृहणीयाच्चतुरंगुलम्।
निखनेत्त गृह यावत्तावत्तस्य कुलक्ष्यः।।

चार अंगुल लम्बी मनुष्य की हड्डी कहीं से लेकर पुष्य नक्षत्र में जिस शत्रु के घर में गाड़ दें। उसका परिवार सहित नाश हो जाता है। यह प्रयोग बिना मन्त्र के ही सिद्ध है।

॥ शत्रु संतति नाशक प्रयोग ॥

सर्पास्थ्यंगुल मात्रं चाश्लेषायां रियोगृं हे।
निखनेच्छतधा जप्तं मारयेत् रिपुसन्ततिम्।।

उक्त प्रकार ही एक अंगुल लम्बी सर्प की हड्डी लेकर आश्लेषा नक्षत्र वाले दिन शत्रु के घर में गाड़ दें और निम्नलिखित मन्त्र का दस हजार जप करे तो शत्रु की संतति का नाश होता है।

मन्त्र–"ओं सुरेश्वराय स्वाहा।।"

॥ शत्रु कुटुम्ब घातक प्रयोग ॥

अवश्वास्थिकीलमश्विन्यां निखनेच्चतुरंगुलम्।
शत्रोगृहे निहन्त्याशु कुटुम्बं वैरिणां कुलम्।।

१–दो ठः ठः की जगह स्वाहा लगाया जाता है और स्वाहा की जगह ठः ठः भी लगता है। दोनों एक साथ प्रयोग करने का शास्त्रीय विधान नहीं है।

चार अंगुल लम्बी घोड़े की हड्डी अश्विनी नक्षत्र में निम्नलिखित मं
से अभिमंत्रित करके जहाँ-जहाँ गाड़ दे वहाँ शत्रु के परिवार का विन
होता है।

घातक मन्त्र–"ॐ हुं हुं फट् स्वाहा।।"

॥ मुक्ति मुक्ति प्रयोग ॥

आर्द्रायां निम्बबन्दाकं शत्रोः शयनमन्दिरे।
निखनेन्मृतवत्र्छत्रु शद्धृते च पुनः सुखी।।

नीम का बान्दा आर्द्रा नक्षत्र में शत्रु के शयनगार में गाड़ने से श
को मरण तुल्य कष्ट होने लगता है और उसे उखाड़ लेने पर शत्रु पु
सुखी हो जाता है।

तथा शिरीषबन्दाकं पूर्वोक्तेनोडुना हरेत्।
शत्रोर्गेहिस्थापयित्वा रिपोर्नाशोभविष्यति।।

इसी प्रकार शिरीष का बान्दा शत्रु के घर आर्दा नक्षत्र में गाड़ने
शत्रु का नाश होता है।

नाश मन्त्रः–"हूं हूं फट् स्वाहा।।"

॥ ज्वर द्वारा शत्रु मारण ॥

गृहण मन्त्रः– ॐ डं डां डिं डीं डुं डूँ डें डैं डों डों डौं डँः डंः अमु
गृहण हुँ हुं ठः ठः।"

---

१. इस प्रयोग में १७ बार मन्त्र पढ़ना होता है।

मंत्रेण सहस्रवारमभिमैन्त्रिलं नरास्थि । श्यशाने निखननेन मृत्युः ।।

इस मन्त्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित कर मनुष्य की हड्डी श्मशान
गाड़े तो शत्रु की मृत्यु होय।[1]

॥ अन्य प्रयोग ॥

रिपुविष्टां वृश्चिकं च खनित्वा तु विनिःक्षिपेत् ।
आच्छाद्यावरणेनाथ तं पृष्टें मृत्तिकां क्षिपेत् ।
म्रियते मलरोधेंन उद्घृते च पुनः सुखी ।।

शत्रु की विष्ठा तथा बिच्छू एक हंड़िया में बन्द करके ऊपर से मिट्टी
गाकर बंद करें। फिर पृथ्वी में गाड़ दे तो शत्रु का मलावरोध होकर शत्रु
रण तुल्य कष्ट पाने लगता है और भूमि खोद कर हंडी खोल देने से शत्रु
नः सुखी हो जाता है।

शत्रु पादतलात्पांसु गृहणीयांसु गृहणीयात् भौमवासरे ।
मोमूत्रेण तु सिंचित्वा प्रतिमां कारयैत् सुधीः ।।

मंगलवार को शत्रु के पांव के नीचे की मिट्टी लाकर गाय के मूत्र
ं भिगोकर एक प्रतिमा का निर्माण करे।

निर्जन च नदीतीरे स्थापयेत् स्थण्डिलोपरि ।
लोहशूलं च निखनेत्तद्धक्षसि सुदारुणम् ।
लद्यामे भैरवं कृष्णं बलिभिः प्रत्यहं जपेत् ।।

जहाँ कोई न आता जाता हो ऐसे एकान्त स्थान पर या किसी नदी

१. इस प्रयोग में इक्कीस बार मन्त्र पढ़ना होता है।

का किनारा हो या कोई वन हो, वहाँ पर एक वेदी बनाकर उस पर पुत
को सुला दें और उसकी छाती में एक नुकीला शूल (सूजा) गाड़ दें, पि
वाम भाग में काल भैरव की स्थापना करें। प्रति दिन बलि एवं पूजन प्रद
करे।

एकादशं वटुं तत्र परमान्नेन भेजयेत्।
अखण्डदीपं तस्याग्रे कटुतैजेन ज्वालयेत्।।

प्रयोग स्थल पर ११ वेद पाठी ब्राह्मण-ब्रह्मचारी बालकों को भोज
करावें तथा काल भैरव के समझ कडुआ सरसों के तेल का दीप जलावें

व्याघ्रचर्मासनं कृत्वा निवेसेत्तस्य दक्षिणे।
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ जपेन्मन्त्रमतन्द्रितः।।

मूर्ति के दक्षिण भाग मे व्याघ्र के चर्मासन पर दक्षिण मुखी बैठ क
जितेन्द्रिय होकर रात्रि में निम्नलिखित मंत्र जपें।

**पोथय मन्त्रः-"ओं नमो भगबते महाकालभैरवा कालाग्नितेजसे
अमुकं में शत्रुं मारय मारय पोथय पोथय हु फट् स्वाहा।।"**[1]

अयुतं प्रजपेदेनं मन्त्रं निशि समाहतः'
एकोनविंशद्दिवसैर्मारणं जायते ध्रुवम्"

सावधान होकर रात्रिकाल में इस मंत्र का दस हजार बार जाप क
ऐसा करने से १६ दिनों में शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

१-यह मन्त्र सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है और तत्काल अपना प्रभाव करता है।

॥ अथ आर्द्रपटी साधन विनियोगः ॥

ओं अस्य श्री आर्द्रपटी महाविद्या मंत्रस्य दुर्वासा ऋषिर्गायत्री छदः बीज स्वाहाशक्तिः ममामुक-शत्र-निग्रहार्थ जपे विनियोगः।

॥ अथ आर्द्रपटी मन्त्रः ॥

"ओं नमो भगवति आर्द्रं पटेश्वरि हरितनीलपटे कालि आर्द्रजिह्वे ण्डालिनि रुद्राणि कपालिनि ज्वालामुखि सप्तजिह्वे सहस्रनयेन एहि हे अमुकं ते पशुं ददामि अमुकस्य जीवँ निकृन्तय एहि एहि वितापहारिणी हुं फट् मूर्भवः वः स्वः फट् रुथिरार्द्रँवशाखादिनि मम त्रून् छेदय छेदय शोणितं पिब पिब हुँ फट् स्वाहा।"

॥ आर्द्रपटी प्रयोग ॥

स्नानादि से शुद्ध होकर पवित्र आसन पर बैठ सबसे पहल आर्द्रपटी ा विनियोग करें। इस आर्द्रपटी मन्त्र[1] का केवल एक मास जप करने त्र से ही शत्रु का मरण हो जाता है।

क्रष्णाष्टमी समारथ्य यावत्कृस्ण यतुर्दशीम्।
शत्रु नामसमायुक्तं मन्त्रतत्वञ्जपेन्नरः।
रिपुपादस्थधूल्याश्च खुर्यात् पुत्तलिकां ततः।।
अजापुत्रबर्लि दत्त्वा वस्त्रं रक्तेन संलिपेत्।
ततो गृहीत्वा तद्वस्त्रं न्यसेत् पुत्तलिकोपरि।

---

1. शत्रु के नाश तथा मरण में यह कवच बेहद प्रभावकारी हैं।

यावच्छुस्यति तद्वस्त्रं तावच्छत्रुर्विनश्यति।
मन्त्रराजप्रभावेण नात्र कार्या विचारणा।।

यह प्रयोग कृष्ण पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ करें। कृष्ण पक्ष की चतु
को समाप्त करे तथा अमुक शब्द के स्थान पर शत्रु का नाम लेकर
बार प्रतिदिन मन्त्र का जप करे। प्रयोग की समाप्ति के दिन शत्रु के दा
पैर के नीचे की मिट्टी लाकर एक पुतली बनाए तथा देवी काली को
बकरे की बलि देकर उसी बकरे के रक्त में वस्त्र कौ भिगोवें और
वस्त्र में उस पुतली को लपेट दें और मन्त्र का जप करता रहे। रक्त
वस्त्र के सूखते ही शत्रु का मरण हो जाता है।

॥ अथ वैरीमारण कवच विनियोग ॥

"ओं अस्य श्रीकालीकाकवचस्य गैरुवऋषिर्गायत्री छन्दः श्रीकालीदेवता सद्यः शत्रुहननार्थे विनियोगः।।"

हाथ में जल ले उपरोक्त मंत्र पढकर पृथ्वी पर इसे छोड़ दें।

॥ अथ कालिका ध्यानम् ॥

ध्यात्वा कालीं महामाया त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां लोलजीह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्।।

ध्यान करे कि भगवती काली काले वर्ण की तीन आँखों वाली
भुजाओं वाली, जिसकी जिह्वा बाहर निकलती हुई है और वह देवी चन्
के समान कान्तिमान है।

नीलोत्पलदलश्यामां शत्रु संघविदारिणीम्।

नरमुण्डं तथा खड्र्ग कमलं वरदं तथा।।

तथा नील कमल के समान श्याम हैं, शत्रुओं का नाश करने वाली नरमुण्ड खड्ग, खप्पर एवं कमल पुष्प अपने हाथों में लिए हुए हैं।

विभ्राणां रक्तवसनां घोरदंष्ट्रास्वरूपिणीभ्।
अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम्।।

लाल वस्त्र पहिने, भयंकर दाँतों वाली, बड़े जोरोंसे हंसती हुई नग्नदेह वाली काली।

शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषिताम्।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु कवचं पठेत्।।

मुर्दे पर बैठी हुई नरमुण्डों की माला पहने हुए महादेवी काली यह ध्यान करते हुए निम्नलिखित कवच का पाठ करना चाहिए।

॥ अथ कवच प्रारम्भ ॥

ओं कालिका घोररूपाढ्य सर्वकामप्रदा शुभा।
सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाश करोतु में।।

हे भयंकर रूप धारण करने वाली एवं संपूर्ण कामनाओं को परिपूर्ण करने वाली और सब देवताओं द्वारा स्तुति की जाने वाली माता काली मेरे शत्रु का नाश करो।

हीं हीं स्वरूपिणी चैव ह्रीं ह्रीं सं हं गिनी तथा।
ह्रीं ह्रीं क्षैं क्षौं स्वारूपा सा सर्वदा शत्रु नाशिनी।।

हीं हीं स्वरूप वाली, हीं हीं सं हं रूपी बीज को धारण करने वाली

देवी हीं हीं क्षैं क्षौं स्वरूप वाली माता क़ाली आप सदा शत्रुओं क़ा नाश करने वाली हैं अतः मेरे भी शत्रु का विनाश कीजिए।

श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबन्धबिमोचिनी।
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशम्भश्च महासुरः।।

श्रीं हीं ऐं रूप वाली यथा संसार के भव बन्धन से छुड़ाने वाली हे भगवती कालिके आपने जिस प्रकार शुम्भ-निशुम्भ का वध किया था।

वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शंकरप्रियाम्।
ब्रह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नरसिंहिका।।

ब्राह्मी (गायत्रीरूपा), शैवी (पार्वतीरूपा), वैष्णवी (लक्ष्मीरूपा) वाराही एवं नारसिंही आदि अनेक रूप धारण करने वाली शंकरप्रिया कालिके ! मैं उसके शत्रु का विनाश करने के लिए आपको नमस्कार करता हूं।

कौमारी श्रीश्च चामुण्डा खादयन्तु मम द्विषान्।
सुरेश्वरी घोररूप चण्डमुण्डविनाशिनी।।

कौमारी, श्री (लक्ष्मीरूपा) सुरेश्वरी (इन्द्रणीरूपा) तथा भयंकर रूप धारण करने वाली और चण्ड मुण्ड का विनाश करने वाली हे चामुण्डे! मेरे शत्रुओं का भक्षण करो।

मुण्डमालावृतांगी च सर्वतः पातु मां सदा।
ह्रीं ह्रीं कालिके घोरदंष्ट्र रुधिरप्रिये।।

हीं हीं रूपिणी, नरमुण्डों की माल धारण करने वाली, विकराल दाँतों वाली एवं रक्त पान से प्रसन्न होने वाली मेरी माता कालिके सदा रक्षा करो।

॥ अथ मारण माला मन्त्र ॥

"ॐ रुधिर पूर्ण वक्त्रे च रुधिरावितस्तिनि मम शत्रून् खादय-खादय, हिंसय-हिंसय, मारय मारय, भिन्धि-भिन्ध, छिन्धि-छिन्धि, उच्चाटाय-उच्चाटय, द्रावय-द्रावय, शोषय-शोषय यातुधानिके चामुण्डें ह्रीं ह्रीं वां वीं कालिकायै सर्वशत्रून् समर्पयामि स्वाहा।। ॐ जहि-जहि, कटि-कटि, करि-करि, कटु-कटु, मर्दय-मर्दय, मोहय-मोहय, हर-हर भम रिपून् ध्वंसय-ध्वंसय, भक्षय-भक्षय, त्रोटय-त्रोटय, यातुधानिका चामुण्डायै सर्व जनान्, राजपुरुषान् राजश्रियं देहि देहि, नूतनं-नूतनं धान्यं जक्षय जक्षय जक्षय क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं: स्वाहा।।"

॥ अथ फलश्रुति ॥

इत्येतत् कवचं दिव्यं कथितं तव रावण।
ये पठन्ति सदा भक्त्या तेषां नश्यन्ति शत्रुवः।।
वैरिणः प्रलयं यान्ति व्याधिताश्य भवन्ति हि।
धनहीनाः पुत्रहीनाः शत्रुवस्तस्य सर्वदा।।
सहस्रपठनात् सिद्धिः कवचस्य भवेत्तदा।
ततः कार्याणि सिद्धयन्ति नान्यथा मम भषितम्।।

हे रावण ! मैंने इस दिव्य कवच का तुम्हारे समक्ष वर्णन किया है जो भी इस कवच का भक्तिपूर्वक नित्य पाठ करेगा उसके शत्रुओं का नाश होगा। उसक शत्रु रोग से पीड़ित होंगे एवं धन पुत्रादि के सुखों से रहित हो जायेंगे। इस कवच के एक हजार पाठ करने मात्र से ही सिद्धि मिल जाती है। यह कवच सिद्ध हो जाने पर मारण प्रयोग में अवश्य ही सफलता

प्राप्त होती है अन्यथा नहीं।

स्मशानांगारमादाय चूर्ण कृत्वा विधानतः।
पादोदकेन पिष्ट्वा च लिखेल्लोहशलाकया।।
भूमौ शत्रून् हीनरूपान् उत्तराशिरसस्तथा।
हस्तं दत्त्वा तत् हृदयं कवचं तु स्वयं अठेत्।।

इसे सिद्ध करके जलती हुई चिता से अंगारा लाये और अग्नि शान्त होने पर कोयले का चूर्ण करके शत्रु के पैर से स्पर्शित जल मिलाकर खूब घोंटकर स्याही बनायें। जब यह स्याही बन जाए तो लोहे की कलम से शत्रु की कुरूप मूर्ति बनायें जिसके पैर दक्षिण दिशा एवं सिर उत्तर दिशा की ओर हो। उस मूर्ति के हृदय पर अपना हाथ रखकर उक्त कवच तथा माला मन्त्र का पाठ करें।

प्राणप्रतिष्ठां कृत्या वै तथा मन्त्रेण मन्त्रवित्।
हन्यात् शस्त्र प्रहारेण शत्रोश्च कण्ठ मक्षयम्।।
ज्वलदंगार लेपेन भवति ज्वरिता भृशम्।
प्रोक्षणैवमिपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम्।।

प्राण प्रतिष्ठा[१] का मन्त्र जानने वाले विद्वान् से मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करायें या स्वयं प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र से प्राण प्रतिष्ठा करें। इसके बाद मूर्ति के कण्ठ को एक तीखे शस्त्र से एक बार में काट दे। इस कटी हुई मूर्ति के सिर व घड़ के ऊपर जलते हुए अंगारे से लेप करें। इस प्रकार करने से शत्रु ज्वर से पीड़ित होकर प्राण त्याग देता है और केवल बायाँ पैर पोंछने से दरिद्र हो जाता है।

---

१. यह विधि मेरी पुस्तक 'मन्त्र रहस्य' में दृष्टव्य है—श्री यशपाल जी

वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम्।
परमैश्वर्यदं चैव पुत्रपौत्रादिवृद्धिक्म।।
प्रभातसमये चैव पूजाकले प्रयत्नतः।
सायँ काले तथा पाठात् सर्वसिद्धिर्भविद्ध्रुवम्।।

यह कवच शत्रुओं का नाश करने वाला, उनको वश में करने वाला, महान् ऐश्वर्य का दाता एवं पुत्र पौत्रादि की वृद्धि करने वाला है। प्रातः काल या सायं काल पूजा के समय इसका नियमित पाठ करने से अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है।

शत्रुरुच्चाटनं याति देशात् वैरिविच्युतो भवेत्।
पश्चात् किंकरतामेसि सत्यं सत्यं न संशयः।।

इसके पाठ मात्र से ही शत्रु का उच्चाटन होता है अर्थात् देश छोड़कर परदेश चला जाता है या फिर दास की तरह वश में होकर रहता है। यह श्री शंकरजी का वचन पूर्णताया सत्य है, इसमें संशय नहीं करना चाहिए।

(इति उड्डीश तन्त्रे रावण-शिव-सम्वादे मारण प्रयोग कथनं नाम प्रथमः पटलः श्री यशपाल जी कृत सम्पूर्णम्।)

❑❑❑

"आप अपने है अतः अपने आपसे प्रेम करें। ऐसा करके प्रेम और वासना का भेद समझ जायेंगे।" **—आद्यानन्द यशपाल 'भारती'**

ॐ अथ द्वितीय पटलः ॐ

॥ अथ माला निर्णयः ॥

प्रवालवज्रमणिभिर्वश्यपौष्टिकयोर्जपेत् ।
मत्तेभदन्तमणिभिर्जपेदाकृष्टकर्मणि ।।
साध्यकेशसूत्रयुक्तस्तुरंगदशनोद्भवैः ।
अक्षमालां परिष्कृत्य विद्वेषोच्चाटने जपेत् ।।

मूंगा तथा हीरा की माला पुष्टि एवं वशीकरण के प्रयोग में लाभप्र रहती है। आकर्षण के प्रयोगों में हाथी के दांत की माला से जप करें। विद्वेषण तथा उच्चाटन के प्रयोग में स्फटिक या घोडे के दाँतों की माल सूत में या बाला में गूंथ कर जप करें। जिस प्रयोग में जिस प्रकार की माला लिखी है उसी प्रकार की माला का जप करने से सिद्धि की प्राप्ति हो जाती है।

मृतस्य युद्धशून्यस्य दशनैर्गर्दभस्य च।
कृत्वाक्षमाला जप्तव्यं शत्रोर्मारणामिच्छता।।

शत्रु के मारण प्रयोग में या शत्रु की सैन्य-स्तम्भन करने के प्रयोग में गदहे के दांतों की माला या स्फटिक की माला से जप करें।

क्रियतें शंखमालाभिर्धर्मकामार्थ सिद्धये।
पद्माक्षैः प्रजपेन्मन्त्रं सर्वकामार्थ सिद्धये।।

धर्म, अर्थ एवं काम की सिद्धि के लिए शंख की माला से जप करें। सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि के लिए कमल की माला से जप करने से

सिद्धि के प्रत्यक्ष अनुभव होते हैं।

रुद्राक्षमालया जप्ती मन्त्रः सर्वफलप्रदः।
स्फाटिकी मौक्तिकी वापि रौद्राक्षी वा प्रवालाजा।
सरस्वती प्राप्तये च पुत्रजीवैस्तथा जपेत्।

रुद्राक्ष की माला से सब प्रकार के मन्त्रों का जप किया जा सकता है। स्फटिक, मोती, मूंगा, रुद्राक्ष तथा पुत्रजीव की माला पर जप करने से विद्या की प्राप्ति होती है।

पद्मसूत्र कृता रज्जुः शस्ता शान्तिकपौष्टिके।
आकृष्टोच्चाटयोर्वाजिपुच्छबालसमुद्भवा।

शान्ति एवं पुष्टि के प्रयोग में माला को कमल के सूत्र में पिरोयें। आकर्षण तथा उच्चाटन के प्रयोग में घोड़े की पूंछ के बालों में माला को पिरोने चाहिए।

नरस्तायुविशेषे तु मारणे रज्जरुत्तमा।।
अन्यासां चाक्षमालानां रज्जः कार्पासिकी मता।।

मारण प्रयोग में मनुष्य की स्नायु में माला को पिरोयें और अन्य कार्यों की पूर्ति के लिए कपास का सूत ही प्रशंसनीय है अर्थात् कच्चे सूती धागे में माला पिरोनी चाहिए।

सप्तविंशति संख्याकैः माला सिद्धि प्रतच्छति।
अक्षैस्तु पंचदशभिरभिचारफलप्रदा।।

सत्ताईस दाने की माला सिद्धि प्रदान करने वाली होती है। अभिचार कर्म प्रयोग में पन्द्रह दाने की माला होनी चाहिए। जिस प्रयोग के हेतु जैसी

माला का वर्णन किया है उस प्रयोग में वैसी ही माला प्रयोग करना चाहिए।

अक्षमाला विनिर्दिष्टा मन्त्रादौ तत्त्वदर्शिभिः।
अष्टोत्तरशतेनैव सर्वकर्मेषु पूजिता।।

रुद्राक्ष की माला से सब प्रकार के मन्त्र सिद्ध किये जा सकते है, ऐसा मन्त्र शास्त्र के तत्वदर्शियों ने कहा है तथा एक सौ आठ दाने की माला सब कार्यों में सिद्धि प्रदान करने वाली होती है।

जपेत् पूर्वमुखं दश्ये दक्षिणं चाभिचारके।
पश्चिमे धनदं विद्यादुत्तरं शांतिकं भवेत्।।
आयुष्यरक्षां शांति च पुटिं वापि करिष्यति।।

वशीकरण प्रयोग में पूर्व मुखी होकर बैठें फिर जाप कर्म आरम्भ करें एवं अभिचार में दक्षिण मुखी बैठें धन की इच्छा से जप करने वाले साधक पश्चिम मुखी बैठें तथा शांति कर्म, आयु, रक्षा पुष्टि एवं विद्या आदि की प्राप्ति के लिए उत्तर मुखी बैठकर जप करना चाहिए।

॥ अथ जप लक्षण ॥

यं श्रूयतेऽन्यः स तु वाचिकः स्यात्।
उपांशु संज्ञो निजदेहवेद्यः।।
निष्कम्प दन्तौष्ठमथाक्षराणां।
यच्चिन्तितं स्यादिह मानसाख्यः।।

मुख्यतः जप तीन प्रकार का होता है। १. वाचिक, २. उपांशु तथा ३. मानसिक। जिस जप में मन्त्र का उच्चारण दूसरे व्यक्ति को सुनाई पड़े उसे वाचिक जप कहते हैं। २. जो दूसरे व्यक्ति को और स्वयं को भी सुनाई

न पड़े उसे उपांशु नामक जप कहते हैं। जिसमें जिह्वा, दाँत तथा होठों का हिलना न दृष्टिगोचर हो तथा मंत्र के अक्षरों को केवल मन में ही चिन्तन किया जाए उसे मानसिक या मानस जप कहते हैं। मानस जप का विशेष अभ्यास हो जाने पर इसे ही अपजा जाप के नाम से ऋषियों ने सम्बोधित किया है।

पराभिचारे किल वाचिकः स्यात्।
उपांशुरुक्तोऽप्यथ शान्तिपुष्टयोः।।
मोक्षेषुजापःकिल मानसाख्य–
स्त्रिधा जपः पापनुदे तथोक्तः।।

मारण प्रयोग में वाचिक जप करें अर्थात् मन्त्रों का जारे-जोर से उच्चारण करें, शान्ति एवं पुष्टि के कर्म में उपांशु अर्थात् दूसरे को सुनाई न दे तथा मोक्ष एवं ज्ञान प्राप्ति में निमित्त मानस जप करे।

॥ अथ कौतुक दर्शन ॥

कृष्णजीरकचूर्णेन अज्जिताक्षी न पश्यति।
तक्रेण क्षालयेच्चक्षुः सुस्थो भपति घोटकः।।

स्याह जीरे के चूर्ण के अंजन से घोड़े अंधे हो जोते हैं। इसके बाद यदि उनकी आँखों को मट्ठे से धो दें तो फिर पहले की भाँति देखने लगते हैं।

घ्राणे छछुन्दरीचूर्णे दत्ते पतति घोटकः।
स्वस्थश्चन्दनपानेन नासायां तु न शंसयः।।

छछुन्दर का चूर्ण घोड़े के नाक में डाल देने से घोड़ा बेसुध हो जा
है तथा जल में चन्दन घिसकर पुनः नाक में डाल देने से वह स्वस्थ
जाता है।

अश्वस्थिकीलमश्विन्यां कुर्याद् सप्तागुलं पुनः।
निखनेदश्वशालायां मारयत्येव घोटकान्।।

घोड़े की हड्डी की सात अंगुल की कील बनाकर अश्विनी नक्षत्र वा
दिन घुड़साल में गाड़ दें तो घोड़े मरने लग जाते है।

॥ अथ अश्व मारण मन्त्र ॥

"ओं अश्वं पच पच स्वाहा।"
अयुत जपात् सिद्धि ।।

यह मन्त्र दस हजार की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। उपरोक
कील इसी मन्त्र से अभिमंत्रित करके घुड़साल में गाड़नी चाहिए।

॥ अथ मत्स्य नाशक प्रयोग ॥

संग्राह्य पूर्वफाल्गुन्यां बदरीकाष्ठकीलकम्।
दासगृहेऽष्टांगुलंच निखनेन्मत्स्यनाशकम्।।

बेर के काष्ठ की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में यदि
मछियारे के घर में गाड़ दें तो उसकी सब मछलियां नष्ट हो जायेंगी।

॥ मत्स्य नाशक मन्त्र ॥

"ओं जले पच पच स्वाहा।।"

लष्यनेन मन्त्रेणायुत-जपात् सिद्धिः।।

यह मन्त्र दस हजार बार जपने से सिद्ध होता है। इस मन्त्र से अभिमंत्रित करके कील गाड़नी चाहिए।

॥ अथ वस्त्राणि नाशक प्रयोग ॥

गृहीत्वा पूर्वफाल्गुन्यां जातीकाष्ठस्य कीलकम्।
अष्टांगुलप्रमाणं तु निखन्याद्रजके गृहे।
शताभिमन्त्रितं कृत्वा तस्य वस्त्राणिनाशयेत्।।

चमेली की लकड़ी की आठ अंगुल लम्बी कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में निम्नलिखित मन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रित कर धोबी के घर में गाड़ने से उसके सब वस्त्र नष्ट हो जाते है।

॥ अथ वस्त्र नाशक मन्त्र ॥

"ओं कुम्भं स्वाहा।
अयुत् जपात् सिद्धिर्भवति।।"

यह मन्त्र दस हजार बार जपने से सिद्ध होता है।

॥ अथ तेल नाशक प्रयोग ॥

मधुकाष्ठस्य कीलं तु चित्रायां चतुरंगुलम्।
निखनेत्तैलशालायां तैलं तत्र विनश्यति।।

महुआ के काष्ठ की चार अंगुल लम्बी कील चित्रा नक्षत्र में तेल पेरने के स्थान पर गाड़ देने से सम्पूर्ण तेल नष्ट हो जाता है।

॥ तैलनाशन मन्त्रः ॥

ओं दह दह स्वाहा।
इत्यनेन सहस्त्रसंख्याकजपः।।

यह मन्त्र एक हजार बार जपने से सिद्ध होता है। उपरोक्त कील इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके ही गाड़ी जाती है।

॥ शाक नाशक प्रयोग ॥

गन्धकं चार्णितं तत्र तिक्षि पेज्जलमिश्रितम्।
नश्यन्तिसर्वथाकानि शोषाण्यल्पबलानि च।।

गन्धक का चूर्ण पानी में घोलकर शाक के ऊपर छिड़क देने से सारी शाक नष्ट हो जाती है, यह प्रयोग बिना मन्त्र के ही सिद्धि दायक है।

॥ गौ दुग्ध नाशक प्रयोग ॥

निक्षिपदनुराधाया जम्बूकाष्ठस्य कीलकम्।
अष्ठागुलं गोपगेहे गोदुग्धं परिनश्यति।।

जामुन की लकड़ी की आठ अंगुल की कील अहीर के घर में जहाँ गायें दूही जाती हों वहां अनुराधा नक्षत्र में गाड़ देने से गायों का दूध सूखा जाता है।

॥ मदिरा नाशक ॥

षोडशांगुलकं कीलं कृत्तिकायां सितार्कजम्।।
शौण्डिकस्य गृहे क्षिप्तं मदिरां नाशयत्यलम्।।

सफेद मदार की लकड़ी की सोलह अंगुल की कील कृत्तिका नक्षत्र में मदिरा बनाने वाले के घर में गाड़ देने से मदिरा नष्ट हो जाती है।

॥ पान नाशक प्रयोग ॥

नवांगुलं पुंगकाष्ठकीलकं निक्षिपेत् गृहे।
ताम्बूलिकस्य क्षेत्रे वा ऋक्षे शतभिषाऽह्वये
तदातस्य च ताम्बूलं नाशयत्याशुनिश्चितम्।।

सुपारी की लकड़ी की नौ अंगुल की कील शतभिषा नक्षत्र में तमोली के घर में या खोत में गाड़ देने से उसके पान नष्ट हो जाते हैं।

॥ फसल हानिदायक प्रयोग ॥

शस्यस्य नाशनं चाथ कथायामि समासतः।
येनैव कृतमात्रेण शस्यनाशो भविष्यति।।

मैं खेती के नाश की विधि संक्षेप में कहता हूं जिस क्रिया को करने मात्र से अन्न के फसलों का सम्यक विनाश होता है।

इन्द्रवज्रं पतेत् यत्र गृहीत्वा मृत्तिकां ततः।
मन्मृत्तिकां समादाय वज्रंकृत्वा विचक्षणः।।
क्षेत्रे यस्मिन् रोपयेत् सस्यं सर्व विनश्यति।
इमं मंत्रं समुच्चार्य मन्त्रेणानेन मन्त्रयेत्।।

जहां पर वर्षा काल में आकाश से बिजली गिरी हो वहां की मिट्टी लाकर एक वज्र बनायें तथा निम्नलिखित मंत्र से अभिमंत्रित करके जिस खेत में गाड़ें उसकी फसल नष्ट हो जायेगी।

॥ सस्यनाशन मन्त्रः ॥

"ॐ नमो वज्रपाताय सुरपतिराज्ञापयति हुं फट् स्वाहा।।

इत्यनेन मन्त्रेणयुतजपत सिसिद्ध।।

यह मन्त्र दस हजार बार जपने से सिद्ध होता है।

(इति श्री उड्डीश तन्त्रे रावण शिव सम्वादे माला निर्णय एवं कोतुकादि दर्शनम् श्री यशपाल जी कृत सम्पूर्णम्।)

'उचित अनुचित के भंवर जाल से निकलकर कर्म पथ पर अग्रसर होइये। आपके सामने सर्वप्रथम जो आवश्यक कार्य हो उसे तुरन्त पूर्ण कीजिए। ऐसा ही करते रहने से आप कर्मयोगी का गौरव अनुभव करेंगे।'

—आद्यानन्द यशपाल 'भारती'

ॐ अथ तृतीयः पटलः ॐ

॥ अथमोहनाभिधानम ॥

अथाग्रे कथयिष्यामि प्रयागं मोहनाभिधम्।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां श्रृणु रावण यत्नतः।।

हे रावण ! अब मोहनी कहता हूं, ध्यान देकर सुनो, यह प्रयोग शीघ्र ही सिद्धि दिलाता है।

सिन्दुरं कुंकुम चैव गोरोचनसमन्वितम्।
धात्रारसेन संपिष्टवा तिलकं लोकमोहम्।।

सिन्दूर, केशर व गोरोचन को आँवले के रस में पीसकर तिलक करने से देखने वाले सब लोग मोहित हो जाते हैं।

सहदेव्या रसेनैत्र तुलसी बीजचूर्णकम्।
रवौयस्तिलकं कुर्यात् माहेयेतसकलं जगत।।

सहदेई के रस में तुलसी का बीज घोटकर रविवार के दिन तिलक करने से देखने वाले सब लोग मोहित हो जाते हैं।

मनशिशलां च कर्पूरं पेषयेत कदलीरसैः।
तिलकं मोहनं नृणां नान्यथा मम भाषितम्।।

मैनसिल एवं कर्पूर मिलाकर केले के रस में घोटकर तिलक करने से दर्शक गण निश्चित मोहित हो ताते हैं।

हरितालं चाश्वगन्धा पेषयेत कदलीरसैः।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोक मोहनम्।।

हरताल, असगन्ध तथा गोरोचन को केले के रस में घोटकर तिलक करने से देखने वाले सब लोग मोहित होते हैं।

श्रृंगीचन्दन संयुक्तं वचाकुष्टसमन्वितम्।
धूपं देहे तथा वस्त्रे मुखे दद्यात विशेषतः।।
पशुपक्षिप्रजानां च राजमोहनकारकम्।
ताम्बूलमूलतिलकम् लोकमोहनकारकम।।

काकड़सिंगी, सफेद चन्दन, वच तथा कट इनको एक साथ मिलाकर इसकी धूप अपने कपड़ों एवं शरीर पर देने से मोहनी शक्ति प्राप्त होती है, अर्थात् उस आदमी को देखकर राजा, मनुष्य तथा पशु-पक्षी आदि सभी जीव मोहित हो जाते हैं, पान की जड़ का तिलक भी मोहन करता है।

सिन्दूरं च वचा श्वेतं ताम्बलरसपेषिता।
अनेनैव तु मन्त्रेण तिलकं लोकमोहनम्।।

सिन्दूर तथा वच मिलाकर पान के रस में घोटकर मोहन मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कर तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

अपामार्गोभृंगराजो लाजा च सहदेविका।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः।।

चिड़चिड़ा, भृंगराज, लाजवन्ती तथा सहदेवि आदि सबको घोटकर मोहन मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से सभी लोग मोहित हो जाते हैं।

श्वेतदूर्वा गृहीत्वा तु हरितालं च पेषयेत्।
कृतं तु तिलकं भाले दर्शनान्मोहनकारकम्।।

सफेद दूब तथा हरताल एक साथ पीसकर मोहन मन्त्र से अभिमंत्रित करके तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

विल्वपत्रं गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत्।
कपिलापयसा युक्तं वर्टीं कृत्वा तु गोलकीम्।
एभिस्तु तिलकंकृत्वा मोहयेत् सर्वतो जगत्।।

बिल्वपत्र को अच्छी तरह छाया में सुखाकर कपिला गौ के दूध में घिसकर गोली बनावें और उसे मोहन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करें तो जगत् मोहित होता है।

॥ अथ मोहन मन्त्रः ॥

"ॐ उड्डामरेश्वरय सर्व जगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा।।"

इत्येयन मंत्रेणालक्ष जपत सिद्धि।

यह मन्त्र मोहनी मन्त्र है। इसका एक लक्ष्य जप इसे सिद्ध करता है। इसके बाद उपरोक्त कार्यों में इसे प्रयोग करें।

(इति उड्डीश तन्त्रे रावण शिव सम्वादे मोहन प्रयोग नाम श्री यशपाल जी कृत तृतीय पटल समाप्तम्।।)

□□□

卐 अथ चतुर्थः पटलः 卐

॥ अथ स्तम्भन प्रयोग ॥

अथाग्रे सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं स्तम्भनाभिधम्।
यस्व साधन मात्रेण सिद्धिः करतले भवेत्।।

अब मैं स्तम्भन प्रयोग का वर्णन करता हूँ, ध्यान देकर सुनो क्योंकि इसके साधन से सिद्धि निश्चित रूप से हाथ में आ जाती है।

॥ अथ जल स्तम्भन प्रयोग ॥

तत्रादौ कथयिष्यामि जलस्तम्भनमुत्तमम्।
कुलीरनेत्रदंष्ट्राश्च रुधिमं मांसमेव च।।
हृदयं कच्छपस्यैव शिशुमारवसा ततः।
विभीतकस्य तैलेन सर्वाण्येकत्र सिद्धयेत्।।
एभीः प्रलेपनु कुर्याज्जले तिष्ठेद्यथासुखम्।
उरगस्य वसा ग्राह्या नक्रस्य नकुलस्य च।।
उण्डुभस्य शिरोग्राह्यं सर्वाण्येकत्र कारतेयत्।
वि भीतकस्य तैलेन सिद्धं कुर्यात् समाहितः।।
तैलं पक्वतऽयसे पात्रे कृष्णाष्टम्यां समाहितः।
शंकरस्चार्यनं कृत्वा मूर्ध्नि कृत्वा प्रदाक्षिणाम्।।
अष्टाधिकसहस्रेय चाज्यहोमं ततश्चरेत्।
लेपं कृत्वाऽथ मन्त्रेण ततः सिद्धि प्रजायते।।

स्तम्भन प्रयोग में सर्वप्रथम मैं जल का स्तम्भन करता हूँ। केकड़े का पैर, दाँत तथा रक्त एवं कछुओं का कलेजा, सूंइस की चर्बी तथा भिलावे के तेल को एक में मिलाकर पकावें। इसका शरीर पर लेप करने से मनुष्य जल के ऊपर सुखपूर्वक स्थिर हो सकता है अर्थात् डूब नहीं सकता। सर्प, नक्र तथा नेवला की चर्बी और डुगडुम का सिर इन सबको एक साथ भिलावे के तेल में पकावें, पकने के बाद एक लोहे के बर्तन में रख लें। कृष्ण पक्ष की अष्टमी आने पर शिवजी की पूजा करें तथा स्तम्भन मन्त्र से एक हजार आठ बार घी की आहुति देवें। इसके बाद स्तम्भन मंत्र को पढ़ता हुआ तेल का शरीर के ऊपर लेप करें तो जल पर सुख पूर्वक बैठ सकते हैं अथवा चल फिर सकते हैं। इसी प्रयोग को शंकर जी के प्रसाद से सिद्ध कर प्राचीन महात्माओं ने बढ़ती हुई नदियों को पार कर चमत्कार दिखलाया था।

॥ अथ अग्नि स्तम्भन प्रयोगः ॥

मण्डूकस्य वसा ग्राह्या कपूरिणैव संयुता।
लेप मात्राच्छरीराणामग्निस्तम्भं प्रजायते।।

मेंढक की चर्बी तथा कपूर एक साथ मिलाकर लेप करने से अग्नि में शरीर नहीं जलता।

कुमारी रसलेपेन किञ्चत् वस्तु न दह्यते।
अग्निस्तम्भनयोगोऽयं नान्यथा मम भाषितम्।।

घृतकुमारी का रस लेप करने से कोई वस्तु आग में नहीं जलती। यह मेरा वचन सत्य है।

॥ स्तम्भन मन्त्रः ॥

'ॐ नमो भगवते जलं स्तम्भय-स्तम्भय हुं फट स्वाहा।'

लक्ष्य जपते सिद्धि भवति।।

यह मन्त्र एक लक्ष जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध होने पर ही यह क्रिया करनी चाहिए।

॥ अथ आसन स्तम्भन प्रयोग ॥

श्वेतगुञ्जाफलं क्षित्वा नृकपाले तु मृत्तिकाम्।
बलि दत्त्वा तु दुग्धस्य तस्य वृक्षों भवेत् यदा।।
तस्य शाखा लताग्राह्या यस्याग्रे तां विनिक्षिपेत्।
तस्य स्थाने भवेत् स्तम्भः सिद्ध योगः उदाहृतः।।

मृतंक की खोपड़ी में मिट्टी भरकर उसममें श्वेत गुञ्जा का बीज बो दें और गौ के दूध से उसको सींचते रहें, जब वह जमकर लता के रूप में परिणत हो जाए तो उसकी शाखा तोड़ कर जिसके स्थान पर या जिसका निर्देश कर सामने डाल दें तो उस व्यक्ति के आसन का स्तम्भन हो जाता है।

॥ आसन स्तम्भन मन्त्रः ॥

"ॐ नमो दिगम्बराय अमुकस्य आसनं स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।।"

अयुत जपात सिद्धि।

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध होने पर एक हजार बार जप कर प्रयोग करना चाहिए।

॥ अथ बुद्धि स्तम्भन प्रयोगः६ ६॥

उलूकस्य कपेर्वापि ताम्बूले यस्य दारयेत्।

विष्टां प्रयत्नतस्तस्य बुद्धिस्तम्भः प्रजायते।।

उल्लू तथा बन्दर की विष्ठा पान में जिसको खिला दी जायेगी उसकी बुद्धि का स्तम्भन हो जायेगा।

॥ अथ धाव स्तम्भन ॥

पुष्यार्केऽन्हि समादाय खरमञ्जरिमूलकम्।
पिष्ट्वा लिपेच्छरीरेषु शस्त्रस्तम्भः प्रजायते।।

जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो उस दिन खरजमञ्जरी की जड़ लावें। उसको पीसकर शरीर पर लेप करने से शस्त्र द्वारा शरीर पर घाव नहीं होता है।

खर्जूरी मुखमध्यास्था कटिबद्धा च केतकी।
भुजदन्डस्थिते चार्के सर्वशस्त्रनिवारणम्।।

खजूर मुख में, केतकी कमर में एवं भुजाओं पर मदार की जड़ बांध लेने से सर्व प्रकार के शस्त्रों का निवारण होता है।

गृहीत्वा रविवारे तु बिल्वपत्रं च कोमलम्।
लेपः शस्त्र स्तम्भकश्चैव पिष्ट्वा विससमं तथा।।

बेल के कोमल पत्तों को कमल की नाल के साथ पीसकर शरीर पर लेप करने से शस्त्र का स्तम्भन होता है।

॥ शस्त्र स्तम्भन मन्त्रः ॥

"ॐ नमो अघोररूपाय शस्त्र स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।"

अयुत जपात सिद्धि

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है।

॥ अथ मेघ स्तम्भन प्रयोगः ॥

इष्ट का द्वयमादाय सम्पुटं कारयेन्नरः।
चितांगेरण संलेख्य भूस्थं स्तम्भनेमेघकम्।।

दो ईंट लाकर दोनों ईंटों द्वारा संपुट करें। चिता के कोयले से उस पर मेघ लिखकर उस संपुट को स्तम्भन मंत्र से अभिमंत्रित करें और उसे पृथ्वी में गाड़ दे तो मेघों का स्तम्भन हो।

॥ अथ निद्रा स्तम्भन प्रयोगः ॥

मूलं गृहीत्वा मधुकं पिष्ट्वा नस्यं समाचरेत्।
मधुना बृहती मूलेरञ्जयेल्लोचनद्वयम्।।

भटकटैया को मधु के साथ पीसकर नसवार लें तो नींद न आवे। मधु तथा भटकटैया दोनों को खूब घोटकर अंजन बना लें ओर दोनों आंखों में लगा लें तो नींद का स्तम्भन हो जायेगा।

॥ अथ पशु स्तम्भन ॥

उष्ट्रस्यास्थि चतुर्दिक्षु निखेनद्भूतले ध्रुनम्।
गोमाहिष्यादिकस्तम्भे सिद्धयोंग उदाहृतः।

जहाँ पर गायों, भैंसों या अन्य पशुओं आदि के रहने के स्थान हों वहाँ पर चारों ओर ऊँट की हड्डी गाड़ देने से पशुओं का स्तम्भन होता

है।

उष्ट्रलोमं गृहीत्वा तु पशूपरि विनिक्षिपेत्।
पशूनां भवति स्तम्भः सिद्धयोग उदाहृतः।।

ऊंट के रोवें लेकर चाहे जिस पशु पर छोड़ दें उसका स्तम्भन हो जायेगा यह सिद्ध प्रयोग है।

॥ अथ मुख स्तम्भनः ॥

हरितालरसेनैव रविपत्रं समालिखेत्।
यस्यनामोद्यानमध्ये ईशाने स्थापयेत्ततः।
मुखस्तम्भनकं तस्य नान्यथा मम भाषितम्।।

हरताल के रस से मदार के पत्ते पर जिसका नाम लिखकर किसी बगीचे के ईशान कोण में गाड़ देने से उसके मुख का स्तम्भन हो जाता है। हे रावण ! यह मेरा कहना सत्य है।

॥ अथ सैन्य स्तम्भन प्रयोग ॥

रविवारे गृहीत्वा तु श्वेतगुंजाफलं शुभम्।
निखेनेच्च श्मशानेव ताषाणं तत्र दापयेत्।।
अष्टानां योगिनी पूज्या रौद्री माहेश्वरी तथा।
वाराही नारसिही च वैष्णवी च कुमारिका।।
लक्ष्मी ब्राह्मी च सम्पूज्या गणेशो वटुकस्तथा।
क्षेत्रपालः सदा पूज्यः सैन्यस्तमभो भविश्यति।।

पृथक् पृथक् बलिं दत्त्वा दशनामाभिघानतः।
मद्यमांस तथा पुष्पं धूपं बलीं क्रियाम्।।

रविवार के दिन सफेद गुंजा का फल चोंटली लेकर श्मशान की भूमि पर गड्ढा खोदकर गाड़ दें तथा ऊपर से पत्थर रखकर दबा दें। अब आठों योगनियों की तथा रौद्री, माहेश्वरी, बाराही, नारसिंही, वैष्णवी, कुमारिका, लक्ष्मी तथा ब्राह्मी एवं गणेश, वटुकभैरव, क्षेत्रपाल तथा दिग्पालों का षोडशोपचार की विधि से पूजन करें। मदिरा व मांस की बलि पृथक-पृथक् नामों से दें। फिर सैन्य स्तम्भन मन्त्र का दस हजार जप करें।

॥ सैन्य स्तम्भन मन्त्रः ॥

'ॐ नमः कालरात्रित्रिशूलधारिणी मम शत्रु सैन्यस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।'

भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकौ तु पक्षकौ।
भूर्जपत्रे लिखेन्मन्त्रं शत्रुनाम समन्वितम्।।
गोरोचनं गले बध्वा काकोलुकस्य पक्षकौ।
सेनानी सम्मुखं गच्छेन्नान्यथा मम भाषितम्।।
शब्दमात्रं सैन्यमध्ये पलायन्ते मुनिश्चितम्।
राजा प्रजा गजश्चापि नान्यथा मम भाषितम्।।

मंगलवार को कौआ तथा उल्लू के पंख की कलम बनाकर गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर पलायन मंत्र को शत्रु के नाम सहित लिखें। भोजपत्र को तथा उन दोनों पखों को ताबीज में भरकर गले में बांधकर जिस सेना के सम्मुख जाकर जोरों से डाँटते हुए शब्द उच्चारण करें तो केवल उसके

शब्द को सुनकर राजा एवं प्रजा सहित सम्पूर्ण सेना भाग जाए।

॥ पलायन मन्त्रः ॥

'ॐ नमो भयंकराय खड्ग धारिणे मम शत्रुसैन्य पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।।'

अयुत जपात् सिद्धि भवति।

(इति उड्डीश रावण-शिव संवादे स्तम्भनं नाम श्री यशपाल जी कृत चतुर्थ पटलः समाप्तम्।)

❑❑❑

कम बोलना व अधिक सुनना लोकप्रियता के लिए अनिवार्य नियम है। —आद्यानन्द यशपाल "भारती"

卐 अथ पंचमः पटलः 卐

॥ शिव उवाचः ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि योगं विद्वेषणाभिधम्।
महाकौतुकरूपं च श्रृणु रावण ! यत्नतः।।

शंकरजी बोले कि हे रावण ! अब मैं विद्वेषण प्रयोग कहता हूँ। तुम ध्यान से उसका श्रवण करो क्योंकि यह महाकौतुक रूपी है।

॥ अथ विद्वेषण प्रयोगः ॥

गजदन्तं गृहीत्वा च सिंहदन्तं तथैव च।
पेषयेण्नवनीतेन तिलकं द्वेषकारकम्।।

हाथी का दाँत और सिंह का दाँत चूर्ण कर मक्खन के साथ मिला तिलक करने योग्य बनाकर मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करें तो उस तिलक को देखते ही शत्रु आपस में लड़ने लगते हैं।

एकहस्त काकपक्षमुलूकस्य करे परे।
मन्त्रयित्वा मेलयित्वा कृष्णसूत्रेण वेष्टयेत्।।

एक हाथ में कौवे का पंख तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर दोनों को विद्वेषण मन्त्र से अभिमंत्रित कर काले डोर से एक साथ बाँध दें।

अञ्जलीं च जले चैव तर्पयेत् हस्तपक्षकः।
एवं सप्तदिनं कुर्यादष्ठोत्तरशतं जपेत्।।

फिर जल में खड़े होकर तथा उस बंधे पंखों को हाथ में लेकर सात दिन तक विद्वेषण मन्त्र से प्रतिदिन एक सौ आठ बार तर्पण करने से विद्वेषण हो जाता है।

गृहीत्वा गजकेशं च सिंहकेशं तथैव च।
गृहीत्वा पादपांसुं च पुतलीं निखनेत् भुवि।।
अग्निस्तस्योपरिस्थाप्यो मालती कुसुमं हुनेत्।
विद्वेषंकुरुते ननं नान्यथा च मयोदितम्।।

शत्रु के पांव के नीचे की मिट्टी लाकर पुतली बनावें तथा उसके ऊपर हाथी एवं सिंह के बाल लपेट भूमि में गाड़ दें। ऊपर एक वेदी बनाकर अग्नि स्थापना करें फिर मालती के पुष्पों का विद्वेषण मन्त्रों के द्वारा हवन करें ते विद्वेषण हो जाता है।

ब्रह्मदण्डिसमूला च काकजंघा समन्विता।
जातिपुष्परसैर्भाव्या सप्तरात्रं पुनः पुनः।।
ततो मार्जार मूत्रेण सप्ताहं भावयेत् पुनः।
एष धूपः पदातव्यो शत्रु गोत्रस्य मध्यतः।।
यथा गन्धं समाघ्राति तथा सर्वैः समं कलिः।
तयो विद्वेषणं याति सुहृदिभिर्वान्धवै सह।।

ब्रह्मदण्डी तथा काक जंघा को सात दिवस तक चमेली के फलों के रस में भिगो दें फिर उसे निकालकर पुनः सात दिवस तक बिल्ली के मूत्र में भिगो रखें फिर उसे निकाल लें। शत्रु के घर के समीप उसी का धूप

देवें। इस धूप की सुगन्धि को जो भी सूंघेगा उनमें परस्पर विद्वेषण होगा।

गजकेसरिणो दन्तान्नवनीयेन पेषयेत्।
यननाम्ना ह्यते चाग्नौ तयोविद्वेणं भवेत्।।

हाथी एवं सिंह के दाँतों का चूर्ण मक्खन में मिलाकर जिसका नाम लेकर विद्वेषण मन्त्र से अग्नि में हवन किया जायेगा उसका सभी से विद्वेषण होगा।

गृहीत्वा महिषकेशं चअश्वकेशेन भवेत्।
सभायां दीयते धूपो विद्वेषो जायते क्षणात्।।

भैंस और घोड़े के बाल मिलाकर जिस सभा में इनका धूप दे उस सभा में क्षण मात्र में ही विद्वेषण हो जाता है।

मार्जार्या मूषिकायाश्च विष्टाभादाय यत्नतः।
विद्वेष्य पादतलयोर्मृदमादाय मेलपेत्।।
जपन्मंत्रशतं कुर्यान्नरपुत्तलिकां शुभाम्।।
नीलवस्त्रेण संवेष्टय तद् गृहे निखनेद्यदि।

बिल्ली, मूषक और शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी लाकर एक साथ करके एक पुतली बनावें और उसे नीला कपड़ा ओढ़ा दें एक सौ बार विद्वेषण मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाड़ दें तो शीघ्र ही शत्रु का उसके परिवार वालों से विद्वेषण हो जायेगा।

एकहस्ते काकपा़मुलूकस्य करे परे।
मन्त्रयित्वा मेलयित्वा कृष्ण सूत्रेण वेष्टयेत्।।

यद्गृहे निखनेत् भूमौ विद्वेषस्तस्य जायते।
पुनश्च संस्थीकरणं घृतगुग्गुलधूपतः।।

एक हाथ में कौवे का पंख तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर विद्वेषण मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। दोनों पंखों को एक साथ मिलाकर काले सूत में बाँधकर जिस शत्रु के घर में गाड़ देगे तो बहन, पिता, पुत्र में विद्वेषण हो जायेगा। जब शान्त करना हो तो उसे निकालकर गुग्गुल का धूप दे तो शान्त हो जायेगा।

॥ विद्वेषण मन्त्रः ॥

'ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।'

लक्ष जपत् सिद्धि भवति।

एक लाख मन्त्र जपने से सिद्ध होता है।

(इति उड्डीशतन्त्रे रावण-शिव संवादे विद्वेषण प्रयोग वर्णनो नाम पंचमः पटलः श्री यशपाल जी कृत समाप्तम्।)

□□□

卐 अथ षष्ठः पटलः 卐

॥ अथ उच्चाटन प्रयोगः ॥

शिव उवाचः

येन हृतं गृहं क्षेत्रं कलत्रं धन पुत्रकम्।
उच्चाटनं वधं कुर्यात् श्रृणु रावण यत्नमः।।

शिवजी बोले—हे रावण ! ध्यान देकर सुनों, यह उच्चाटन तथा व[illegible] उसी के ऊपर करना चाहिए जिसने घर, खेत, स्त्री, धन एवं पुत्र का अपहर[illegible] किया हो।

श्वेत लाङ्गलिकामूलं स्थापयेद्यस्य वेश्मनि।
निखनेत् तु भवेत् तस्य सद्य उच्चाटनं ध्रुवम्।।

कलिहारी की जड़ उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित करें और उसे जिसक[illegible] उच्चाटन करना हो उसके घर में गाड़ दें तो उसका शीध्र ही उच्चाटन [illegible] जायेगा।

ब्रह्मदण्डिचिताभस्म शिवलिंगे प्रलेपयेंत्।
सिद्धार्थेन न संयुक्तं शनिवारे क्षिपद् गृहे।।
उच्चाटनं भवेत्तस्य जायेते मरणान्तिकम्।
बिना मन्त्रेण सिद्धिश्च सिद्धि योग उदाहृतः।।

ब्रह्मदण्डी और चिता की भस्म को एकसार करके शिवलिंग के ऊप[illegible] लेप करें। इसके बाद ब्रह्मदण्डी, चिताभस्म और सरसों को शनिवार के दि[illegible] शत्रु के घर में फेंकने से उच्चाटन होता है।

गृहीत्वोदुम्बरं कीलं मन्त्रेण चतुरंगुलम्।
निखनेद्यस्य शयने तस्योच्चाटनं भवेत्।।

गुलर की चार अंगुल लम्बी लकड़ी की कील उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित करें तथा शत्रु के सोने के स्थान पर गाड़ दें तो उच्चाटन हो जाता है।

काकोलूकस्य पक्षाणि मद्गृहे मिखनेत् रवौ।
यन्नाम्ना मन्त्रयोगेन समस्तोच्चाटनं भवेत्।।

कौवा और उल्लू का पंख उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

नरास्थिकीलकं भौमे निखनेच्छतुरंगुलम्।
तत्र मुत्रं स्वयं. कुर्यात् तस्मोञ्चाटनकं ध्रुवम्।।

मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल लम्बी कील उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु के निवास में मंगलवार को गाड़ कर उसके ऊपर स्वयं पेशाब कर दें तो शत्रु का उच्चाटन निश्चित हो जाये।

सिद्धार्थ शिवनिर्माल्यं निखनेद्यी गृहे जलम्।
उच्चाटनं भवेतस्य उद्धृते च पुनः सुखी।।

सफेद सरसों और शिवलिंग पर चढ़ाया हुआ नैवेद्य एवं जल इन तीनों को निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है और उसे खोदकर निकाल देने से पूर्ववत् सुखी होता है।

॥ उच्चाटन मन्त्रः ॥

"ॐ नमो भगवते रुद्राय करालदंष्ट्राय अमुकं पुत्रबान्धवः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय-उच्चाटय फट स्वाहा।"

अयुत जपात् सिद्धि भवति।

दस हजार जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध होता है। बिना इस मन्त्र की सिद्धि के प्रयोग कभी सफल नहीं होगा।

मध्यास्ने लुंठते भूमौ गर्दभो यत्र धूलिकाम्।
उदङ् मुखः प्रतिच्यां तु गृहीत्वा वामपाणिना।।
यद्गृहे क्षिप्यते धूली तस्योच्चाटनकं भवेत्।
एवं सप्त दिनं कुर्तात् गृहेशोच्चाटनं भवेत्।।

दोपहर में जहाँ गधा लोटता हो वहाँ को धूल पूर्व या पश्चिम मुखी होकर बायें हाथ से उठा लें। इसके बाद उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित करके सात दिन तक बराबर शत्रु के घर में फेंके तो गृह के स्वामी का उच्चाटन होवे।

॥ द्वितीय उच्चाटन मन्त्रः ॥

"ॐनमो भीमास्यात अमुकगृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा।।"

अयुत जपात् सिद्धि भवति।

इस मन्त्र में जहाँ शब्द है वहाँ शत्रु का नाम लेना चाहिए। यह मन्त्र दस हजार बार जप कर सिद्ध करें।

(इति उड्डीशतन्त्रे रावण-शिव संवादे उच्चाटन प्रयोग-वर्णनों नाम षष्ठः पटलः श्री यशपाल जी कृत समाप्तम्।)

□□□
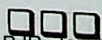
ॐ अथ सप्तमः पटलः ॐ

॥ अथ वशीकरण प्रयोगः ॥

श्री ईश्वर उवाचः

अथाग्रे कथयिष्यामि वशीकरणमुत्तमम्।
राजा प्रजापशूनां च श्रृणु रावण यत्नतः।।

भगवान कहते हैं—हे रावण ! अब मैं वशीकरण के प्रयोग बताता हूं जिसके द्वारा राजा, प्रजा एवं पशु भी वश में किए जा सकते हैं।

प्रिवङ्गु तगरं कुष्ठं चन्दनं नागकेशरम्।
धत्तूरस्य पंचाँगं समभाग तु कारयेत्।।
छायायां वाटिका कायां प्रदेया खानपानयोः।
पुरुषो वाभ नारी च तावज्जीवं वशं नयेत्।।
सप्ताहं मन्त्रितं कृत मन्त्रेणानेनमन्त्रवित्।
एक चित्तस्थितौ मन्त्री जपेन्मन्त्रमतन्द्रितः।।
त्रिंशत् सहक्षसंख्याकं सर्वलोकशंकरम्।।

ककुनी, तगर, कूट, चन्दन, नागकेसर व धतूरा का पंचाँग[1] लेकर (सबको सम भाग लें) जल के सहयोग से घोटें और गोली बनाकर छाया में सुखायें। वशीकरण मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रत कर जिसे वश में करना हो उसे खाने पीने में खिला दें तो वशीकरण होगा।

१—वृक्ष के पांचों हिस्से अर्थात् फल, फूल, जड़, टहनी और पत्ते।

॥ अथ वशीकरण मन्त्रः ॥

"ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहाय मोहाय मिलि ठः ठः स्वाहा।।"

अयुत जपात् सिद्धि भवति।

इस मन्त्र को दस हजार जप कर सिद्ध करें।

विल्वपत्राणि संगृह्य मातुलुंगं तथैव च।
आजादुग्धेन संपिष्टवा तिलकं लोकवश्यकृत।।

बेलपत्र तथा नींबू को बकरी के दूध में घोटें। वशीकरण मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक करने से वशीकरण होता है।

कुमारीकन्दमादाय विजया बीजसंयुतम्।
मस्तके तिलकं कुर्यात् वशीकरण मुत्तमम्।।

भाँग के बीज एवं घिकुआर की जड़ को एक साथ घोंटकर वशीकरण मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक करने से वशीकरण होता है।

गोराचनं वंशनेत्रं मत्स्यपित्तं च कुंकुमं।
चंद नं काकजङ्घां च मूलं भागसमं नयेत्।।
वाप्यादिकजलेनैव पेषयित्वा कुमारिका–
हस्तेनगुटिकां कृत्वा छायायां च विशोषयेत्।।
ललाटे तिलकं कुर्यात् यः पश्यति स वशी भवेत्।
राजद्वारे न्याययुद्धे सर्वत्र विजयी भवेत्।

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केशर, चंदन तथा काक जंघा की जड़ को सम भाग लेकर कुमारी कन्या द्वारा बावली के जल से पिसवाकर वशीकरण मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से वशीकरण होता है एवं विजय श्री प्राप्त होती है।

कुंकुमं चन्दनं चैव रोचनं शशिमिश्रितम्।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम्।।

चन्दन, रोली, गोरोचन एवं कपूर को गौ के दुग्ध में घोंट कर अभिमन्त्रित कर इसका तिलक लगाने से राजा लोग वश में हो जाते हैं।

चम्पकस्य तु वन्दाकं करे बध्वा प्रयत्नतः।
संगृह्य तु भरण्ऽर्के पुष्यार्के वा विधानतः।।
रनाजानं तत् क्षणादेव मनुष्यों वशमानयेत्।
करे सौ दर्शनं मूलं बध्या राजप्रियो भवेत्।।

चम्पा की कली, रवि-पुष्प नक्षत्र में अथवा रवि-भरणी नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधे तो राजा लोग वश में हो जाते हैं अन्य मनुष्यों को क्या कहें? सुदर्शन की जड़ भी इसी नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधने से वशीकरण होता है।

॥ अथ वशीकरण मन्त्रः ॥

'ॐ ह्रीं सः अमुकं ने वश मानय-आनय स्वाहा।'

॥ अथ स्त्री वशीकरणम् ॥

शिव उवाचः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि योगानां सारमुत्तम्।
यस्य विज्ञान मात्रेंण नारी भावति किंकरी।।

शंकर जी बोले हे रावण ! अब मैं उस विधि को कहता हूं जिससे स्त्रियाँ वश में की जाती हैं।

उशीरं चन्दनं चैव मधुना सह संयुतम्।
गलहस्तप्रयोगोऽयं सर्वनारीप्रसाधकः।।

मधु के साथ खस व चंदन मिलाकर तिलक लगाकर स्त्री के गले में हाथ डाले तो स्त्री वश में हो जाती है।

चिताभस्म बचा कुष्ठं कुंकुमं रोचनं समम्।
चूर्ण स्त्री शिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम्।।

चिता की राख, बच, कूट, रोली एवं गोरोचन सम भाग लेकर चूर्ण करके स्त्री के सिर पर डालने से स्त्री वश में हो जाती है।

कृष्णोत्पलं मधुकरस्य पक्षयुग्मं मूलं तथा तगरजं सितकाकजङ्घाम्। यस्या शिरोगतमिदं विहितं विचूर्ण दासीवेभेज्झटिति सा तरुणी विचित्रम्।।

नीलकमल, भौरें के दोनों पंख, तगर की जड़, श्वेत काक जंघा सम भाग लेकर चूर्ण करें। युवती के सिर पर यह चूर्ण डालने से वह वश में

होती है।

सव्येन पाणिकमलेन रतावसाने, यो रेतसानिजभ वेनविलासिनीनाम्।
वामं विलिम्पति पदं सहसैव यस्या, वश्यैव सा भवति नात्रविकल्पभावः।।

स्त्री प्रसंग के पश्चात अपने वीर्य को बाँये हाथ में स्त्री के बाँए चरण के तलवे में लेप करने से स्त्री अवश्य वशीभूत हो जाती है इसमें सन्देह नहीं है।

सिंधुस्थमाक्षिकं कपोतमलांश्चं विष्ट्वा लिंगं विलिप्य तरुणीं तमते नवोढायम्। सोऽन्यं न याति पुरुषं मनसापि नूनं, दासी भवेदति मनोहर दिव्मूर्ति।।

सेंधा नमक, शहद, कबूतर की विष्ठा एकसार करके पीस के लिंग पर लेप करें और स्त्री से मैथुन करें तो स्त्री वश में हो जाती है।

गोरोचना शिशिरदीधिति शम्भुवीर्यैः काश्मीर-चंदनयुतैः कमकद्रव्यैश्च।
लिप्त्वा ध्वजं परिरमत्यबलां नरो यां तस्याः स एवं हृदये मुकुटत्वमेति।।

गोरोचन, कुरैया, पारा और केशर को धतूरे के रस में घोंटकर लिंग पर लेप करके स्त्री के साथ प्रसंग करने पर स्त्री अवश्य वशीभूत होती है।

॥ अथ लिंग स्थूलीकरण ॥

लघुसूक्ष्मेन लिंगेन नैव तुष्यन्ति योशितः।
तस्यात्तत्प्रीतये वक्ष्र स्थलीकरणमुत्तमम्।।

छोटी एवं पतली इन्द्रियों के द्वारा स्त्रियाँ सुखी नहीं होती हैं, अतः

उनके लिए यह मोटा एवं लम्बा होना चाहिए। अब मोटा और लम्बा लिंग बनाने का उपाय कहता हूं।

कुष्ठस्यमातंगबलाबगानां, वचाश्वगन्धागज गिप्पलीनाम्।
तुयंगशत्रोर्नबनीतयोगाल्लेपेनलिगं मुसलत्वमेति।।

कूट, छोटी पीपर, दोनों खरंटी बच, असगन्ध, गजपीपर और कनेर को मक्खन के साथ पीसकर लिंग पर लेप करें तो लिंग मोटा और मूसल की तरह हो जाता है।

सलोध्रकाश्मीरतुरंगगन्धा, मातंगगन्धापरि पाचितेन।
तैलेन वृद्धिं खलु याति लिंग, वरांगना लोक मनोहरं तत्।।

लोध, केसर, असगन्ध, पीपर और शालपर्णी को कड़वे तेल में पकाकर लिंग पर मालिश करने से लिंग लम्बा व मोटा होता जाता है।

हयारिपत्नीनवनीतमध्ये बचाबलाभागरसा मयैश्च।
लेपेन लिंगं सहसैव पुंसां लोहोपमंस्यादिति दुष्टमेतत्।।

बच, खरैटी व पारा भैंस के मक्खन में खूब घोंटकर लिंग पर मलने से लिंग तुरन्त लोहे के समान सख्त हो जाता है।

भल्लातकास्थिजलशूकमथाब्जपत्रमंतरविमर्धम तिमान्सहसैन्धवेन्।
एकद्धिरूढबृहतीफलतायपिष्ट मालपेनं तुरगवद्धिलीकृतेअंगे।।

भिलावा-गिरी, सेवार, कमल के पत्र की राख को सेंधा नमक के साथ जल में घोंटकर लिंग पर लेप करने से घोड़े की तरह लिंग बन जाता है।

वाराहवसयालिंगमधुना सह लेपयेत्।
स्थूलं दृढं च दीर्घ च मासात् लिंगं प्रजायते।।

सूअर की चर्बी और मधु एक में मिलाकर लेप करने से लगभग एक माह के बाद लिंग लम्बा तथा मोटा बन जाता है।

अश्वगन्धावरीं कुष्टं मासीं सिंहीफलान्वितम।
चतुगुणैन दुग्धेन तितलेतं विपाचयेत्।
स्तनलिंगकर्णपाणिवर्धनं भक्षणादितः।।
तद्वच्च मुसली साज्यालेपार्ल्लिगस्य ढार्ढ्र्यकृत्।
पिप्पली लवणक्षीरसितालेपोऽपि दीर्घकृत।।

असगन्ध, सतावर, कूट, जटामांसी और कटेली को चौगुने दूध और चौगुने तिलों के तेल में पकाकर लिंग तथा स्तन[1] पर लेप करने एवं खाने से वह कड़े हो जाते है। इसी प्रकार मुसली का चूर्ण भी घी में मिलाकर लेप करने से इसमें काफी लाभ होता है। पीपर, सेंधा नमक और मिश्री को दूध में पकाकर लेप करने से भी लिंग मोटा एवं लम्बा हो जाता है। यह ध्यान रहे कि यह औषधियाँ गालों पर भी लगाई जाती है तथा बाँहों में भी प्रयोग की जाती है।

मासीं वीक्षफलं कुष्ठभश्वगन्धं शतावरीम।
तैलं पक्त्या प्रलेपेन लिंगस्थौल्यं भवेद्ध्रुवम्।।

जटामांसी, बहेड़ा, कूट, असगन्ध तथा सतवार इनको कडुवे तेल में

१—यह योग पुरुषों के लिए एवं स्त्रियों के स्तनों को सख्त (कठोर) करने के लिए है।

पकाकर लिंग पर मलने से लिंग कड़ा, मोटा एवं लंबा हो जाता है।

सूतको ह्यश्वगन्धा च रजनी गजपिप्पली।
सिता युक्ता जलैः पिष्ट्वा मासैकं लेपयेत्तदा।।
अद्भुतं वर्द्धयेल्लिगं योनिकर्णस्तनानि च।

पारा, असगन्ध, हल्दी, गजपीपर एवं मिश्री जल के साथ घोटकर लिंग व स्तन पर लेप करने से अद्भूत लाभ होता है।

॥ अथ पुरुष वशीकरणम् ॥

रोचनं मत्स्यपित्तं च मयूरस्यशिखां तथा।
मधुसर्पिः समायुक्तं स्त्रीवरांगविलेपनम्।।
निभृते मैथुनेभावे पतिर्दासो भविष्यति।
रूपयौवन सम्पन्नां नान्यामिच्छेत्कदाचन।।

गोरोचन, मछली का पित्त तथा मोर की शिखा को मधु एवं घी में घोटकर योनि के ऊपर लगा कर पुरुष से प्रसंग करने पर पुरुष वश में हो जाता है।

कुलथि विल्वपत्रं च रोचनं च मनः शिला।
एतानि समभागानि स्थावयेत्ताम्रभाजने।।
सप्तरात्रिस्थिते पात्रे तेलमेवं पचेत्ततः।
तैलेन भगमालिप्य भर्तारमनुगच्छति।
संप्राप्ते मैथुने भार्ता दासो भवति नान्यथा।।

कुलथी, विल्वपत्र, गोरोचन एवं मैनशील को सम भाग लेकर चूर्ण करें। ताम्रपात्र में रखकर सरसों के तेल में सात दिनों तक मीठी आंच में पका-पकाकर उतारते जायें। इसे कपड़े से छानकर तेल को योनि पर लगाकर पुरुष के साथ रमण करने से पुरुष वश में हो जाता है।

प्रियंगु शतपुष्पं च कुंकर्म वंशलोचनं।
अश्वमूत्रेण लेपं च तुरुषाणां वशंकुरम्।।
निम्बकाष्ठस्य धूपेन धूपयित्वा भग पुनः।
या नारो रमयेत् कान्तं सा च तं दासतां नयेत्।।

ककुनी सौंफ, केसर, वंशलोचन सम भाग लेकर घोड़े के मूत्र में घोटकर योनि पर लगाकर मैथुन करने से पुरुष अवश्य ही वश में हो जाता है।

॥ अथ कुच काठिन्यम् ॥

एरण्ड तैलं शकुलस्यतैलंतथाच बिल्वस्यरसं गृहीत्वा।
संमर्दयेदुर्ध्वग हस्त केनतदास्तानं नोपतितौकदापि।।

अरण्ड़ी का तेल, मछली का तेल व विल्वफल का लसा इन तीनों को मिलाकर स्तन पर लगाने से स्तन कड़े हो जाते हैं।

श्रीपर्णोरसकर्काभ्यां तैलंबिद्धतिलोद्‌ भवम्।
तत्तैलं तिलकेनापिस्तनस्योपरिदापयेत्।
काठिन्यवृद्धितां यातौ पतितावुत्थितौ च तौ।।

स्मरण रहे कि इसे मलते समय हाथ ऊपर की ओर रहे[1]। काले रंग

१–स्तन को नीचे से ऊपर की तरफ मलें क्योंकि यह क्रिया एक ही बार में स्तन को उठाती है।

का बिच्छू तथा गम्भारी के रस को तिल के तेल में पकावें जब तेल शेष रह जाये तो कपड़े से छानकर स्तन पर मलें तो गिरे हुए स्तन भी कड़े हो कर उठ जाते है।

बृद्धियाः कनयकायाश्च त्वबलायां पयोधरौ।
श्वेतोद्भुत्कुसुमं देयं भवेत् पीनपयोधरः।।

श्वेत रंग के माथे को काली गौ के दूध में पका कर लेप करने योग्य बनाकर स्तन पर लेप करने से स्तन बड़ा एवं कड़ा हो जाता है।

वचन्श्वगन्धा संयुक्ता चाश्वरी पत्रकं तथा।
गजपिप्पलिकायुक्तं सद्योऽमलजलेन च।।
पेषयित्वा विधानेन लेपयेत्स्तनमण्डले।
नयने तु कदाचिद्वैचाम्रतालफलं तथा।।

वच, असगन्ध की जड़ तथा पत्र एवं गज पीपर इन सबको शुद्ध जल से पीस कर स्तन पर लेप करने से स्तन ताड़ के फल एवं उठे आम्र फल के जैसे हो जाते हैं।

गम्भारिपत्रनीरं च तत् समं तिलतैलकम्।
समानं जलभागं च दत्त्वा पाकं समाचरेत्।।
तैलशेषं परिज्ञाय वस्त्रेण शोधयेत् कुचौ।
दिवा प्रलेपनादेव लोहत्वं जायतेऽचिरात्।।

गम्भारि के पत्ते का रस व तिल का तेल सम भाग लेकर दूने जल में पाक करें। जब केवल तेल शेष रह जाय तो कपड़े से छानकर शीशी में रख लें। इसे स्तन पर मलें इसे एक ही बार मलने के बाद स्तन लोहे

से कड़े हो जायेंगे।

॥ अथ योनि संस्कारः ॥

प्रक्षालयेत्निम्बकषायतोयैर्निशाज्य कृष्णागरुगुग्गुलानाम्।
घूपेनयोनिनिशिधूपलित्वानारी प्रमोदंविदधाति भर्तुः।।

निम्ब पत्र को कोरी हाँडी में जल में डाल करके खूब उबालें फिर कपड़े से छानकर योनि को धोवें, काले अगर व गुग्गुल को आग में जलाकर योनि को धूपित करके पति के साथ मैथुन करे तो पति बड़ा प्रसन्न होता है।

प्रक्षालयनिम्बस्यजलेनभूयः तस्यैवकल्केनविलेप येच्च।
त्यजेयुरत्याश्चिरकाद्भूत एन्धम्बराँएस्य न सँशयोऽत्र।।

जिस स्त्री की योनि से दुर्गन्ध आती हो वह नीम के पानी से योनि को धोकर नीम के कोमल पत्ते पीस कर योनि पर लेप करे। ऐसा दो या तीन बार करने से योनि की दुर्गध समाप्त हो जाती है।

॥ अथ रोम नाशनै ॥

पलाशभस्महिडतालचूर्णे, रम्भाम्बुमिश्रैरूपलिप्य भूयः।
कन्दर्पगेहे मृगलोचनीनां रोमाणि रोहन्ति कदापि नैव।।

पलाश पत्र की भस्म तथा हरताल की भस्म को केले के रस में मिलाकर रोम स्थान पर लगा देने से बाल साफ हो जाते हैं ओर फिर कभी नहीं जमते हैं।

एकः प्रदेयो हरितालभागः पञ्च प्रदेयो जलजस्य भागाः।

सस्वस्तरोर्भस्मनएव पञ्च प्रोक्तश्च भागः कदलीजार्द्राः।।

एक भाग हरताल की भस्म, पाँच भाग शंख की भस्म पाँच भाग पिलखन की भस्म इन सबको केले के रस में मिला कर रोम वाले स्थान पर लगाने से बाल साफ हो जाते है।

तालकं शंखचूर्ण तु मंजिस्ठाभस्म किशुकम्।
समभागप्रलेपेन रोमखण्डनमुत्तमम्।।

हरताल चूर्ण, शंख चूर्ण और मजीठ भस्म को पलाश के फूल के साथ पीसकर लेप करने से भी बाल साफ हो जाते है।

तालकं शंखचूर्णन्तु पिष्ट्वाच क्षारतोयकैः।
तेनलिप्त्वाकचाधर्मस्थितेगच्छन्तितत्क्षणात् ।।

हरताल चूर्ण व शंख का चूर्ण चूने के पानी में घोट कर रोम के स्थान पर लगाकर धूप देने से बाल साफ हो जाते हैं।

पूंगपत्रोत्थनी रेण पिष्ट वा गन्धकमुत्तमम्।
तेन लिप्ते स्थिते धर्मे रोमखडनमुत्तमम्।।

सुपारी के पत्ते के रस में उत्तम गन्धक पीसकर रोम स्थान पर लगाने और धूप दिखाने से रोम साफ हो जाते हैं।

॥ अथ योनि संकोचनं ॥

निशाद्वयं पंकजकेशरं च निष्पीड्य देवद्रुमतुल्यभागं।
अनेन लिप्तं मदनातपत्रं, प्रयाति संकोचफलं युवत्याः।।

आमा हल्दी व खाने की हल्दी कमल केसर तथा देवदारु सम भाग

कर के जल में पीसकर योनि स्थल पर लगाने से योनि संकुचित हो जाती है

संघातकीपुष्पफलत्रिकेन, शम्बत्वचा साररस घृतेन।
लिप्त्वारवरांगम्मधुकेनतुल्यं, वृद्धापि कन्येव भवेत् पुमान्ध्री।।

धर्व के पुष्प, त्रिफला, जामुन की छाल, जमुना का रस घी तथा मुलहठी सम भाग लेकर पीसें, इसे योनि पर लगावें यदि वृद्धा स्त्री भी हो तो उसका गुप्ताँग लडकी की भाँति संकुचित हो जाता है।

इन्दीवरव्याघ्रिवचोषणानां पुरंगमारासनयामिनीनाम्।
लेपश्चनार्याःस्मररन्ध्रसंस्थो, संकोचयत्याशुहठेन रन्ध्रम्।।

नील कमल का बीज, कटेरी, बच, काली मिर्च, कनैर की छाल वीज तथा हल्दी को सम भाग लेकर घोंटकर लेपन योग्य बनाए और योनि पर लगाए अति शीघ्र ही योनि संकुचित हो जाती है।

याशक्रणोपं स्वयमेव पिष्ट्वा, विलिम्पति स्त्री च वरांगदेशम्।
आहत्य देशं कटिनं च गाढं भवन्न चात्रास्ति विचार्यकार्या।।

वीरबहूटी नाम की जड़ी को पीसकर योनि पर लगाने से योनि सहज ही में कड़ी तथा गहरी भी हो जाती है। ऐसे विधिवत् प्रयोग मैंने अपनी पुस्तक 'तन्त्र प्रयोग' में विस्तार से प्रस्तुत किये हैं। कई बार एक स्त्री को काम संतुष्टि न हो पाने के कारण वह अनेक पुरुषों के साथ विषय भोग करती है।

मैंने अपनी पुस्तक 'यन्त्र विधान' में एक मन्त्र दिया है जिसे लिंग के ऊपर लिखकर स्त्री के साथ सम्भोग करने पर वह स्त्री दूसरे पुरुष से विषय भोग नहीं कर पाती। यह समस्त प्रयोग गुप्त हैं ओर मेरे द्वारा पहली बार प्रस्तुत हैं। अतः अन्य कहीं आपको यह सामग्री नहीं मिलेगी।

॥ अथ स्त्री द्रावण ॥

यद्यप्यष्ट गुणाधिको निगदिनः कामांगनानांसदा नोयातिद्रवतातथापि झटिति स्त्रो कामिनां संगमे। तस्माद् भेषजसंप्रयोग विधिना संक्षेपतोद्रावणं केचित्पस्तलयोमिनी रजदशांप्रीत्यापरंकामिनाम्।।

कामशास्त्रियों ने पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में आठगुना काम अधिक बताया है इसलिए औरतें जल्दी स्खलित नहीं होती हैं। अतः उन औषधियों का संक्षिप्त वर्णन करता हूं। जिससे कि औरतें भी पुरुषों के साथ प्रेमानन्द ले सकें।

सिन्दूर चिंचाफलमाक्षिकानि, तुल्यानियस्या मदनातपत्रे।
प्रलिप्य यस्याः पुरुषप्रसंगात् प्रागेव वीर्यच्युतिमातनोति।।

सिन्दूर तथा इमली के फल को मधु में घोटकर भगद्वार पर लगाकर मैथुन करने से स्त्री का शीघ्र पतन हो जाता है।

व्योंषं रजः क्षौद्रसमन्वितं वा, क्षिप्तं यदि स्यात् स्मरयन्त्रगेहे द्रुतं भवेत् सा सहसैव नारी, दृष्टः सदायंकिलयगराजः।।

त्रिफला चूर्ण को अच्छी तरह कपड़े से छानकर शहद में मिलाकर योनि द्वार पर थोड़ा सा लगाकर स्त्री को प्रसंग करने पर शीघ्र ही स्खलित हो जाती है।

पिप्पली चन्दनं चैव वृहतोपक्वतिंतिडी।
एषां लिंगे प्रलेपेनद्रवेन्नारी न संशयः।।

पीपर, चन्दर, कटेरी तथा पकी इमली इन सबको घोट पीसकर लेप

बनाकर लिंग पर लगाकर मैथुन करते ही शीघ्र ही स्त्री स्खलित हो जाती है।

अगस्त्यपत्रद्रवसंयुतेन मध्वाज्यसंमिश्रितटंकणेन।
लिप्त्वाध्वजंयोरमतेऽङ्गनानां, स शुक्रमाकर्षति शीघ्रमेव।।

अगस्त के पत्र का रस, भुने सुहागे का चूर्ण, घी को शहद में मिलकर लेप बनाकर लिंग पर लगाकर मैथुन करने से स्त्री का शीघ्र पतन हो जाता है।

सुलोध्र धत्तूरपिप्पलानां, क्षुद्रोषणें क्षौद्र विमिश्रितानाम्।
लेतेनलिंगस्यकरोतितेतः, च्युतिं विपक्षप्रमदाजनष्य।।

लोध, धतूरा कटेरी व पिपरामूल को सम भाग लेकर चूर्ण करें और शहद में मिलाकर लिंग पर लगाकर मैथुन करने से शीघ्र स्त्री रज का स्खलन होता है।

तुरग सलिलमध्येभावितंक्षरेत्रमाषंमरिच मदुक तुल्यां पिप्पलीपेषयित्वारिरमतिविलिप्य स्वयलिंग नरोयः, प्रभवतिवनितानांकाककल्लोलमानः।।

असगन्ध के पत्तों को एक हांडी में डालकर उबालें फिर उस तेल में उरीद एवं मुलेहटी सम भाग पीसकर लिंग पर लगा कर मैथुन करने से स्त्री शीघ्र ही स्खलित[1] हो जाती है।

बिल्वपुष्पं सकर्पूरं मुण्डीपुष्पं च पेषितम्।
लिंगलैपेन रमणां द्रावो भवति संगमे।।

---

१. स्त्री का रजपात हो जाना।

बेल का फूल, मुण्डी का फूल और कपूर को पीसकर लिंग के ऊपर लेप करके स्त्री प्रसंग करने से स्त्री शीघ्र स्खलित हो जाती है।

वृहतिफलमूलानि पिप्पली मरिचानि च।
मधुरोचनया सार्द्ध लिंगलेप द्रवान्विता।।

कटेरी की जड़ तथा फूल, पीपर काली मिर्च, गोरोचन को सम भाग लेकर शहद में घोंटकर लिंग पर लगाकर सम्भोग करने से स्त्री शीघ्र स्खलित हो जाती है।

मरिचकनबीजैः पिप्पलीलोध्रचूर्णैविमलमधुविमिश्रैर्मानवो लिप्तलिंगः। स्मरति रतिविलासे कष्टसाध्यां च नारी, समुचितर तितागां तां विद्रव्याद्रवश्यम्

काली मिर्च धतूरे का बीज, पीपर, लोध का चर्ण सम भाग लेकर शहद में घोटकर लिंग पर लेप कर मैथुन करने से कैसे भी स्त्री हो स्खलित हो जाती है।

सर्वेषा द्रवयोगानां मन्त्रराजं मयोदितम्।
जपेदष्टोत्तरशतं तत्र योगस्य सिद्धये।।

उपर्युक्त औषधियों को निम्नलिखित द्रावण मंत्र से अभिमंत्रित करके ही प्रयोग करना चाहिए।

॥ अथ द्रावण मन्त्र।।

"ओं नमो भगवते रुद्राय उ्ड़ामहेश्वराय स्त्रीणाम्मदं द्रावय द्रावय

ठः ठः **स्वाहा**[1] ।।"

(इति उड्डीशतन्त्र रावण-शिव संवादे वशीकरण एवं काम विषयक प्रयोककथनं नाम सप्तम्ः पटलः श्री यशपाल जी कृत समाप्त ।)

❑❑❑

योगीराज यशपाल जी के प्रसिद्ध तान्त्रिक ग्रन्थ

१. संकटमोचिनी कालिका सिद्धि

२. सृष्टि का रहस्यः दशमहाविद्या

३. संजीवनी विद्या : महामृत्युञ्जय प्रयोग

४. सिद्ध विद्या : स्वरोदय विज्ञान

५. तन्त्र प्रयोग (सुलभ सामग्री से सफल प्रयोग)

६. आदित्य हृदय स्तोत्र (सूर्योपासना सहित)

७. सिद्ध शाबर मन्त्र

८. मन्त्र रामायण (मानस के सिद्ध मन्त्र)

१. इसे 108 बार जपकर अपने अनुकूल कर लें।

卐 अथ अष्टमः पटलः 卐

॥ अथ आकर्षण प्रयोगः ॥

ईश्वर उवाचः

अथाग्रे कथयिष्यामि आकर्षणविधिं वरम्।।
यस्य विज्ञान मात्रेण सत्यमाकषंर्ण भवेत्।।
मानुषासुरदेवाश्च सयक्षीरगराक्षसाः।
स्थावराः जंगमाश्चैव आकृष्टास्ते न शंसयः।।

भगवान शंकर बोले, हे रावण ! अब मैं आकर्षण के प्रयोगों का वर्णन करता हूं जिसके ज्ञान से वास्तव में ही आकर्षण होगा। निम्नवर्णित प्रयोगों से मनुष्यों, असुर, देवता, यज्ञ, उरग राक्षस, स्थावर जंगम सभी का आकर्षण होता है। इसमें संशय न करें।

गृहीत्वार्जुनवन्दाकमाश्लेषयां समाहितः।
अजामूत्रेण सम्पिष्ट्वा निक्षिपेच्छिरसोपरि।।
नारी वा पुरुषो यस्य सुतो वा पशुरेव च।
आकृष्टः स्वयमायाति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

आश्लेषा नक्षत्र में देवदारु वृक्ष की बाँझी लकड़ी लाकर कूट-पीसकर सुखा लें जिससे कि भुरभुरी हो जाए इसे बकरे के मूत्र में डाल करके सुखायें और चूर्ण कर लें। अब जिसका आकर्षण करना हो उसके सिर पर थोड़ा इसे डाले दें तो उसका आकर्षण हो जायेगा।

सूर्यावर्तस्य मूलं तु पञ्चम्यामानयेत् बुधः।

ताम्बूलेनसमं दद्यात्स्वक्यमायाति भक्षणात् ।।

पंचमा की तिथि में हुरहुर की जड़ खोद लावें और जिसका आकर्षण करना हो उसे पान में रखकर खिला दें तो वह स्वयं ही आकर्षित होकर आपके पास चली आयेगी।

साध्यावामपदस्थां तां मृत्तिकामाहरेत्ततः ।
कृकलासस्य रक्तेन प्रतिमाकारयेत्ततः ।।
साध्यानामाक्षरं तस्यास्तद्रक्तैविलिखेत् हृदि ।
मूत्रस्थाने च निखनेत् सदा यत्रैव मूत्रयेत् ।।
आकर्षयेत्तु तां नारी शतयोजनसंस्थिताम् ।।

स्त्री के बायें पैर के नीचे की मिट्टी लाकर गिरगिटान के रक्त में सान कर उसकी पुतली बनावें इस प्रतिमा के वक्षस्थल पर उस स्त्री का नाम लिखें जिसका आकर्षण करना हो। इस प्रतिमा को मूत्र करने के स्थान पर गाड़ दें। तथा प्रतिदिन इस पर मूत्र करें तो हजारों मील की दूरी पर रहने वाली क्यों न हो वह आकर्षित होकर चली आती है।

(इति उड्डीशतन्त्रे रावण-शिव संवादे आकर्षण प्रयोगकथन अष्टमः पटलः श्री यशपाल जी कृत समाप्त।)

□□□

卐 अथ नवमः पटलः 卐

॥ अथ यक्षिणी साधन ॥

ईश्वर उवाच

अथाग्रे कथयिष्यामि यक्षिण्यादिप्रसाधनम् ।
यस्य सिद्धौ नराणां हि सर्वे सन्ति मनोरथाः ।।

शंकर जी बोले मैं अब यक्षिणियों को सिद्ध करने का उपाय कहता हूं जिसके द्वारा मनुष्य की हर एक कामनायें सिद्ध होंगी।

सर्वासां यक्षिणीना तु ध्यानं कुर्यात् समाहितः ।
भविनो मातृ पुत्री स्त्री रूपन्तुल्यंयथेप्सितम् ।।

इसे सिद्ध करने के कई भाव हैं– जैसे बहिन, माता पुत्री तथा स्त्री रूप में जो साधक जिस भाव के इच्छुक हो, उन्हें उसी भाव का ध्यान करना चाहिये।

भोज्यं निरामिष चान्नं वर्ज्य ताम्बूल भक्षणम् ।
उपविश्य जपादौ च प्रातः स्नात्वा न कंस्पृशेत् ।।
नित्यकृत्यं च कृत्वा तु स्थाने निर्जनिकेजपेत् ।
यावत् प्रत्यक्षतां यान्ति यक्षिण्यो वाञ्छितप्रदाः ।।

इस यक्षिणी साधन में माँस एवं पान का भक्षण अत्यन्त निषेध है। प्रातःकाल स्नान करें, नित्य क्रिया से निवृत होकर जप करना चाहिये और किसी का भी स्पर्श न करना चाहिए। यह सब क्रिया तब तक की जानी चाहिये जब तक वाँछित भाव वाली यक्षिणी प्रत्यक्ष न हो जाए।

॥ अथ महायक्षिणी साधन ॥

॥ अथ यक्षिणी साधन मन्त्रः ॥

"ओं क्ली ही ऐं ओं श्री महा यक्षिण्ये सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः।।"

इमिमन्त्रस्य च जप सहस्रस्य च सम्मितम्।
कुर्यात् बिल्वसमारूढ़ो मासमात्रमतन्द्रितः।।

उपर्युक्त मन्त्र को जितेन्द्रिय होकर बेल वृक्ष पर चढ़कर एक मास पर्यन्त प्रतिदिन एक हजार बार जपें।

सत्वामिषबलिं तत्र कल्पयेत् संस्कृत पुरः।
नानारूपधरा यक्षी क्वचित् तत्रागगिष्यति।।

माँस तथा मदिरा का प्रतिदिन भोग रखें क्योंकि न जाने वह नाना रूप धारण करने वाली यक्षिणी कब उपस्थित हो जाए।

तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपेत् संसक्तमानसः।
यस्मिन्दिने बलिंभुक्तवा वरं दातुं समर्थयेत्।।
तदावरान्वे वृणुयात्तांस्तान्वेमनसेप्सितान्।
धनमानयितुं ब्रूयादथना कर्णकार्णिकीम्।।
भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यं कर्तुमथापि वा।
भूतानानयितुं वापि स्त्रियतायितुं तथा।।
राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विधां यशोबलम्।
एतदन्यद्यदीत्सेत साधकस्तत्तु याचयेत्।।

जिस समय यक्षिणी आकर उपस्थित हो जाए तो उस समय उसे देखकर[1] भयभीत न हों बल्कि अपना जप निरन्तर करते रहें जब वह यह कहे कि मैं अमुक दिन बलि लूंगी तथा वरदान दूंगी तो उसे स्वीकार कर उसी दिन वर की याचना करें, जैसे कि धन की इच्छा हो तो धन माँगे। इसी भाँति कान में बात करना, नाचना या पर स्त्री लाना, राजा को वश में करना, आयु, विद्या, यश, बल आदि चीज की इच्छा हो वही वरदान माँगे।

चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात् सर्व दद्यान्नसंशयः।
आसक्तस्तुद्विजैः कर्यात् प्रयोग सुरपूजितम्।।

प्रसन्न हुई यक्षिणी सब देती है इसमें संदेह नहीं है। यदि प्रयोग को स्वयं न कर सके तो किसी अन्य ब्राह्मण से करावें यह यक्षिणी साधन देवताओं द्वारा भी किया गया है।

सहायानथवा गृह्य ब्राह्मणान्साधयेंस् व्रतम्।
तिस्रः कुमारिका भौज्याः पर मन्नेन नित्यशः।।

या फिर अपने सहायकों को रखकर ब्राह्मणों से करावें और प्रतिदिन तीन कुमारी कन्याओं को भोजन कराते रहें।

सिद्धैधनादिके चैव सदा सत्कर्म आचरेत्।
कुकर्मणिव्ययश्चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छतिनान्यथा ।।

धनादि की सिद्धि होने पर धन अच्छे कार्य में खर्च करें, नहीं तो सिद्धि नष्ट हो जायेगी।

---

१. क्योंकि यह भयानक रूप में भी आ सकती है।

॥ धनदा यक्षिणी मन्त्रः ॥

"ओं ऐं ह्रीं श्रीं धनं मम देहि देहि स्वाहा।"

अश्वत्थवृक्षमारुह्य जपेदेकाग्रमानसः।
धनदाया यक्षिण्या च धनं प्राप्नोति मानवः।।

धन देने वाली यक्षिणी का जप पीपल के वृक्ष पर बैठकर करने से धनदादेवी प्रसन्न होकर धन देती है।

॥ अथ पुत्रदा यक्षिणी मन्त्रः ॥

"ओ हीं हीं रं कुरु कुरु स्वाहा ॥"

चुतवृक्षं समारूह्य जपेदेकाग्र मानस।
अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा मम भषितम्।।

पुत्र की इच्छा वाला व्यक्ति आम के पेड़ के ऊपर चड़कर जप करें तो पुत्रादि यक्षिणी प्रसन्न होकर पुत्र प्रदान करती है।

॥ अथ महालक्ष्मी मन्त्रः ॥

"ओं हीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॥"

वटवृक्षे समारूढ़ो जपेदेकाग्रमानसः।
सा लक्ष्मी यक्षिणी च स्थितालक्ष्मीश्च जायते।।

मन्त्र का जप करने से वह प्रसन्न होकर घर में चिरस्थायी हो जाती हैं।

॥ अथ जया यक्षिणी मन्त्रः ॥

"ओं एंजयायकिण्यै सर्वकार्य साधनं कुरु कुरु स्वाहा।"

अर्कमूले समारूढ़ो जपेदेकाग्रामानसः।
यक्षिणी च जया नाम सर्वकार्यकरी मता।।

मदार की जड़ के ऊपर बैठकर इस मन्त्र को जप करने से जया नाम वाली यक्षिणी प्रसन्न होकर सब कार्यों को सिद्ध करती है।

गुप्तेन विधिना कार्य प्रकाश नैव कारयेत्।
प्रकाशे बहुविध्नानि जायते नात्र संशयः।।
प्रयोगाश्चानुभूतोऽयं तस्माद्यत्नंसमाचरेत्।
निर्विध्नेन विधानेन भवेत् सिद्धिरनुत्तमा।।

यक्षिणियों की साधना गुप्त रूप से ही करनी चाहिये, प्रत्यक्ष प्रकट रूप से करने में विघ्नों का भय रहता है तथा प्रयोग सिद्ध नहीं हो पाते।

॥ अथ भूतिनीसाधनम् ॥

सा भूतिनी कुण्डलधारिणी च सिन्दूरिणी चाप्यथ हारिणी च। नटी तथा चातिनटी च चैटी कामेश्वरी चापि कुमारिका च।।

भूतिनी नाम की यक्षिणी अनेक रूप धारण करती है, जैसे कुण्डल धारण करने वाली, सिन्दूर धारण करने वाली, हार पहनने वाली, नाचने वाली, अत्यन्त नाचने वाली, चेटी, कामेश्वरी और कन्या आदि।

॥ अथ भूतिनि मन्त्रः ॥

"ओं हाँ क्रूँ क्रूँ कटुकटु अमुकी देवी वरदा सिद्धिदा च अंभः ।।

चम्पावृक्षतले रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
पूजनं विधिना कृत्वा दद्यात् गुग्गुलधूपकम् ।।
सप्तमेऽह्नि निशीथे च सा चागच्छिति भूतिनि ।
दद्यात्गन्धोदकेनार्घ्यतुष्टामातादिका भयेत् ।।

भूतिनी का जप चम्पा वृक्ष के नीचे करें और प्रति दिन आठ हजार बार जप करें। पहले भूतिनी का पूजन करें। गुग्गल का धूप इस भाँति से करने पर सातवीं रात में भूतिनी आती है। जब वह आ जाय तो उसे चन्दनमिश्रित जल से अर्घ्य देवें तो प्रसन्न होकर उसी रूप में परिणत हो जाती है जिस रूप की साधना की इच्छा है।

मातेत्यष्टादशानां च वस्त्रालंकारभोजनम् ।
भतिगनीचेत्तदानारींदूरादाकृष्यकमुन्दरीम् ।।
रसं रसांजनं दिव्यं विधानं च प्रयच्छति ।
भार्यचपृष्ठमारोप्य, स्वर्ग नयति कामिता ।
भोजनं कामिकं नित्य साधमाय प्रयच्छति ।।

जब साधक यक्षिणी को माता के रूप में सिद्ध करता है तो वह १८ आदमियों का वस्त्राभूषण और भोजन प्रतिदिन देती है। भगिनी के रूप में सिद्ध होने पर सुन्दर स्त्रियों को दूर-दूर से लाकर देती है तथा रस वाले दिव्य भोजन देती है। भार्या के रूप में सिद्ध होने पर अपनी पीठ पर चढ़ाकर स्वर्गादि लोकों का भ्रमण करती है एवं भोजनादि के पदार्थों को भी उपलब्ध कराती है।

रात्रौ पुष्येण गत्वा शुभा शय्योपकल्पयेत्।
जाति पुष्पेण वस्त्रेण चन्दनेन च पूजयेत्।
धूपं गुग्गुलं दत्त्वा जपेदष्टसहस्त्रकम्।
जपान्ते शीघ्रमायाति चुम्वत्यालिंगयत्यपि।।
सर्वलंकारसंयुक्ता संभोगादिसमन्विता।
कुबेरस्य गृहादेव द्रव्यमाकृष्य यच्छति।।

रात होने पर देवालय में पलंग बिछाकर सजावें तथा चमेली के पुष्प, चन्दन आदि से पूजन कर गुग्गुल की धूनी देकर मन्त्र का अष्ट सहस्र जप करें तो जप की समाप्ति पर सम्पूर्ण वस्त्रालंकरों से विभूषित होकर यक्षिणों प्रकट होती है और साधक का आलिंगन-चुम्बनादि कर भोग करती है तथा कुबेर के कोष से धन लाकर भी देती है।

॥ अथ शव-श्मशान-साधन ॥

ईश्वर उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शवसाधनमुत्तमम्।
श्मशानसाधनं चापि तदाश्चार्यकरं परम्।
यस्य विज्ञानमात्रेण सिद्धो भवति साधकः।।

शंकर जी बोले अब मैं श्मशान सिद्धि अर्थात् मुर्दे के ऊपर चढ़कर सिद्धि किस प्रकार की जाती है उस क्रिया का वर्णन करूंगा जिसके ज्ञान के बाद साधक सिद्ध हो जाता है।[1]

---

१. इसे वीर पूजा या साधन भी कहते हैं।

श्मशानालायमागत्य उपवासो जितेन्द्रियः।
अमायां भौमवारे च शबोपरि समारुहेत्।।
अयुतं प्रजपेन्मंत्रं मौनी निभयरूपतः।
शवसाधनमेतत्तु सिद्धयत्पत्र न संशयः।।
यद्य दाज्ञापयति तत्तत् कुरुते सुविनिश्चितम्।
जपान्ते पूजनं कार्य श्मशाने निर्जने तथा।
षौडशैरु पचारैस्तुश्यामा श्यामलसुन्दरिम्।।

प्रथम निराहार एवं जितेन्द्रिय होकर श्मशान की भूमि पर उस दिन जाय जिस दिन मंगलवार को अमावस्या हो। एक पुरुष के शव का अन्वेषण करके उसकी छाती पर निर्भय होकर बैठकर दस हजार मन्त्रों का जाप करें। फिर वहाँ से उठकर एकान्त में आकर श्यामा और श्यामल सुन्दरी का षोडशोपचार से पूजन करे। यही शव-साधन[1] क्रिया है। ऐसा करने के बाद साधक जो आज्ञा देगा वह यक्षिणी करेगी।

॥ अथ शवसाधन मन्त्रः ॥

'ॐ ह्रीं शवमेनं साधय साधय स्वाहा।'

॥ अथ पादुका साधनं ॥

काजघासिता ग्रह्मा च वास तथा।
अश्वगन्धा समायुक्ता ह्युष्ट्रक्षीरे च पेषयेत्।

१. यह प्रयोग करने से पहले मेरी अन्य पुस्तकों को भली-भाँति समझ लें।

अनेन लिप्तपादे तु योजनानां तिथिर्व्रजेत्।।

श्वेत कोकजंघा, गिद्ध की चर्बी, असगन्ध इनको लेकर ऊँटनी के दूध में पीस कर लेप बनाकर पैर के तलवे में लगाने से मनुष्य पन्द्रह योजन तक निरापद चल सकता है।

॥ अथ पादुका मन्त्रः ॥

'ॐ नमो भगवते रुद्राय भूत बेताल त्रास माय शंख चक्र गदाधराय हन हन महते चन्द्रयुताय हूं फट स्वाहा।'

लक्ष जपात् सिद्धि भवति।

इसी मन्त्र का लक्ष जाप खड़ाऊँ सिद्ध करता है। इसको सौ बार पढ़कर उपर्युक्त लेप अभिमन्त्रित कर लेना चाहिये।

॥ अथ द्वितीय पादुका साधनम् ॥

'ॐ नमो भगवत रुद्राय मासे संमले काले खले घोर प्रवर सर सर स्वाहा।'

श्वानमार्जारनकुलानां पित्तं ग्राह्यं समंस मम्।
योजनानां तिथिर्गत्वा काकमांसं रसांजनम्।
पिष्ट्वा प्रादप्रलेतेन पुनरावर्तते तथा।।

कुत्ता, बिल्ली एवं नेवले का पित्त सम भाग लेकर पैर के तलवे में लेप करके पन्द्रह योजन तक आदमी जा सकता है। काक मांस एवं रसाञ्जन का लेप करके पन्द्रह योजन लौटकर पुनः वापस आ सकता है।

॥ अथ पादलेपन मन्त्रः ॥

'ॐ नमो भगवते रुद्राय हरति गदेश्वराय त्रासय त्रासय चालय चालय स्वाहा ।।'

इस मन्त्र द्वारा उपरोक्त लेप को सात बार अभिमन्त्रित करके तब पैर के तलवे में लगाना चाहिऐ।

काकस्य हृदयं नेत्रं जिह्वा चैव मनः शिलाम् ।
सिन्दूरं गौरिकं चैव अजमारीं च मालतीम् ।।
समां रुद्र चैटां चैव विदार्या सह पेषयेत् ।
तल्लिप्ते पादसहसा योजनानां शतं व्रजेत् ।।
वलीपलितनिर्मुक्तो दययाभूतसंप्लवम् ।

काग की कलेजी, आँख, जीभ, मैनसिल, सिन्दूर, गुरुची, अजवाइन, मालती तथा विदारीकंद को सम भाग लेकर घोटें। लेप बनाकर पाद के तले लगाने से सौ योजन तक जाने की शक्ति पैरों में आ जाती है। इस लेप को भी उपर्युक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर लेना चाहिये।

॥ अथ मृतसञ्जीवनी प्रयोग ॥

मृतसञ्जीवनी विद्यां कथयिप्यामि प्रेमतः ।
लिंगमकोलवुक्षाधः स्थापयित्वा प्रपूजयेत् ।।
यवं घटं च तत्रेव पूजयेर्ल्लिगसन्निधौ ।
वृत्रं लिंगं घटं चैव सूत्रेणैकेन वेष्टयेत् ।।

शंकरजी कहते हैं में अब मृत सञ्जीवनी विद्या[1] का प्रयोग प्रेमपूर्वक

[1] *विस्तृत वर्णन मेरी पुस्तक 'संजीवनी विद्या : महामृत्युंजय प्रयोग' में देखें।*

कहता हूँ। अंकोल नामक वृक्ष के नीचे एक शिवलिंग स्थापित करें। घट के ऊपर कसोरे में यव रखें तथा उसे जल से पूरित करें। प्रथम शिवलिंग की विधिवत् पूजा करें फिर वृक्ष की, फिर यव की तथा फिर घट की पूजा करें। इसके पश्चात् वृक्ष, लिंग तथा घट तीनों को एक सूत्र में बाँध दे।

चतुर्भिः साधकैर्नित्यंप्राणिपत्यकृमेण तु।
एवं च द्विवनं कुर्यादघोरेणसमर्चयेत्।।
पुष्पादिफलपाकान्तं साधनं कारयेत् बुधः।
फलानिपक्वान्यादाय पूर्वोक्तं पूरयेद्घटम्।।

इस क्रिया में चार आदिमियों को साधक साथ ले। सब साधक बारी-बारी से प्रणाम करें और एक-एक साधक दो-दो दिन के लिए तब तक पूजा करता रहे जब तक कि वृक्ष में फल-फूल न लग जायें। जब फल पक जायें तो कलश जो कि पहले से रखा है, उसी में रख दें।

तद्घटं पूजयेन्नितत्यं गन्धपुष्पाक्षतादिभिः।
तुषवर्ज्यन्ततः कुर्वाद्बीजानों घषैयेन्मुखम्।।
तन्मुखे बृह्मांवृतं किचित् किचिद्ं प्रलेपयेत्।
विस्तीर्णमुखभागन्तः कुम्भकारकरोद्भवनम्।।

उस कलश का प्रति दिन षोडशोपचार से पूजन करें। कुछ दिनों बाद फिर उन बीजों को निकालकर उनकी गुद्दी निकालें और छिलके अलग फेंक दें। अब कुम्हार के यहाँ से बड़े मुँह वाला घड़ा लाकर उसके अन्दर एक चौथाई भाग सुहागे से लेप करें।

मृत्तिका लेप येत्त्र तानि बीजानि रोपयेत्।
कण्डल्याकार योगन यत्नात् ऊर्ध्वमुखानि वै।।

शुक्रं तं ताम्रपत्रोऽर्द्ध भाण्डदेयमधोमुखम्।
आपते धार येत्तैलं ग्राहयेत्तं च रक्षयेत्।।
मासार्ध चैव तत्तैलं मासार्द्ध तिलतैलकम्।
नस्यं देयं मृस्यैव कालदंष्टस्यततक्षणा त्।।

फिर उसमें शुद्ध मिट्टी रख कर गोलाई में बीज बो दें। कुछ दिनों बाद जब बीज सूख जाय तो ताम्रपत्र से ढककर घड़े को औंधा कर ऊपर से आँच देकर तेल निकालें। जब तल निकल आये, तब शीशे में रख लें। आधा मासा यह तेल तथा आधा मासा तिल का तेल मिलाकर उस रोगी के नाक में डालें जिसकी मृत्यु सर्प काटने से हुई हो तो वह रोगी जीवित हो जायेगा। यह सर्पदंशियों की अचूक दवा है।

॥ अथ अघोर मन्त्रः ॥

'अघोरेभ्योऽथघोरेघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यः नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः।'

इस अघोर मंत्र से घट की पूजा करके प्रतिदिन नमस्कार करने से संजीवनी विद्या का प्रयोग सिद्ध होता है।

॥ विद्याधर सिद्धिः ॥

मायाबीजं तथा गौर गोपतये तदनन्त रम्।
एतन्मन्त्रंशुचिर्भूत्वा निशीथे तु जपेत् सुधीः।।
त्रिसहस्रं जपेन्नित्यं ततः सिद्धिर्भवेत् ध्रवम्।
गन्धर्वशब्दविद्भता बलवान् पुत्रवान भवेत्।।

॥ अथ विद्या घर मन्त्रः ॥

'ओं ह्रीं गौगौपतये नमः ।।

अर्ध रात्रि में विद्याधर मंत्र का तीस हजार बार प्रति रात्रि में जप करने से विद्याधर सिद्धि को प्राप्ति होती है तथा गन्धर्व शब्द का ज्ञान, पुत्र और बल भी प्राप्त होता है।

(इति उड्डीशतन्त्र रावण-शिव संवादे विद्याधर सिद्धिकथनं श्री यशपाल जी कृत समाप्तम् ।)

□□□

卐 अथ दसमः पटलः 卐

ईश्वर उवाचः

इन्द्रजालं प्रवक्ष्यामि श्रृणु सिद्धि प्रयत्नतः।
येन विज्ञानमात्रेण ज्ञायेते सर्वकौतुकम्।।

शिवजी ने कहा—अब मैं इन्द्रजाल आदि कौतुक का वर्णन करता हूं जिसके ज्ञान मात्र से प्रत्येक प्रकार के कौतुकों की जानकारी हो जाती है।

७१।। अथ भूतमरणम् ॥

आदौ भूतकरं वक्ष्ये तच्छृणुष्वस मासतः।
भल्लातक रसे गुञ्जा विषं चित्रकमेव च।।
कपिकच्छुकरोमाणि चूर्ण कृत्वा प्रयत्नतः।
एतच्चूर्णप्रदानेन भूतीकरणमुत्तमम्।।

गिलोय के रस में गुञ्जा का विष, चीता तथा केंवाच का चूर्ण मिलाकर देने से भूत लगता है।

तस्य रूपं प्रवक्ष्यामि ज्ञायते यैस्तु लक्षणैः।
अंगानाछिधिमायान्ति मूर्छन्ति च मुहुर्मुहुः।
एतत् रूपं भवेद्यस्य तत् भूतावेशलक्षणम्।।

भूत चढ़ने के लक्षण ये हैं कि धीरे-धीरे शरीर का हिलना बार-बार मूर्छा का आना अथवा हाथों का कांपना या देह का पटकना।

॥ भूत निवारण लेप ॥

चिकित्सा तस्य वक्ष्यामि येन सम्पद्यते सुखम्।
उशीरं चन्दनं कुष्ठं लेपो भूतविनाशकः।।

खस, चंदन, कंगनी, तगर, लालचन्दन और कूट एक में पीस लेप करने से भूत उतरते हैं।

॥ अथ झाड़ा मन्त्र ॥

'ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुहुनी कुर्बली स्वाहा।।'

॥ भूत निवारण धूप ॥

इस मन्त्र के द्वारा सौ बार झाड़ने से भूत उतर जाता है।

श्री वेस्टिकं घृत हिंगुं देवदारुगवाक्षि च।
गोबालाः सर्षपाः केशाकटुकी निम्बपल्लवाः।।
द्रेवहत्यौ वचा चर्व्या कार्पासास्थिरुषायवाः।
छागरोमाणि मायूरपिच्छमेकत्रमेलयेत्।।

लोहबान, घी, हींग देवदारु, इन्द्रवारुणी गोदन्ती, सरसों, केश, कुटकी, नीम की पत्ती, दोनों कटाई, बच, चब्य, बनउर, जव, बकरे के बाल तथा मोर की पूंछ।

सुपिष्टोवत्समूत्रेण मृद्धाण्डैधारयैत्बुधः।
एष माहेश्वरी धूपो धूपितोण्मत्तरोगिणौ।।
ग्रहरक्षा पिशाचाद्यापन्नगाः भूतपूतना।

शाकिन्यैकाहिक द्वित्रिज्वराश्चप्तुथिकान्तवाः ।।
नश्यन्ति क्षणमात्रेण ये चान्येविघ्नकारिणः ।

बछड़े के मूत्र में पीस के सुखा लें तथा मिट्टी की सरई में अग्नि जला करके इसकी धूप दें तो ग्रहादि एवं भूतादि डाकिनी-शाकिनी, और भी अनेक दोष ज्वरादि अनेक प्रकार के दुःख दरिद्रों की शान्ति होती है।

गुगुलंलशुनंसर्पिः कंचुकंकपिरोम च।
शिखिकुक्कुटयोर्विष्ठामलः पपरावतस्य च।।
एतत्धूपात्ग्रहाक्रराः पिशाचाभूतपूतनाः।
डाकिन्यैहिकज्वरा रौद्रानश्यन्तिस्पर्शतः।।

गुग्गुल, लहसुन, घी, सांप की केंचुल, बानर का बाल, मोर, मुर्गा एवं कबूतर की विष्ठा मिलाकर धूप देने से बड़े-बड़े प्रेत शान्त हो जाते हैं एवं क्रूर ग्रह पूतना, डाकिनी, एकाहिक ज्वरादि भी भयंकर से भयंकर नष्ट हो जाते हैं।

॥ भूत निवारण अंजन ॥

अंजनंराजिकाकृष्णमरीचैर्भूतनाशनम् ।
नागरं बकुचो निम्बं बतद रौद्रभञ्जनम् ।।

काली सरसों तथा काली मिर्च का अंजन भूत को निश्चय उतार देता है। तगर, बकुची एवं निम्बका अंजन भयानक ज्वर पीड़ा भी शान्त करता है।

भूत निवारण जल

सहिंगुवारिणापीताभूदम्बस्यमूलिका ।
शाकिनी ग्रह भूतनां निग्रहं कुरुते ध्रुवम् ।।

एक पात्र में गोरखमुण्डी की जड़ रखें। उसमें हींग मिश्रित जल छोड़ें और उस जल को पीने से ग्रहादि एवं भूतादिकों की बाधा शान्त होती है।

भूत निवारण नसवार

विशालायाः फलं पक्वं हितं गोमूत्रनस्यतः ।
ब्रह्मराक्षसभूतानां पद्मं वा मारिचान्वितम् ।।

इन्द्र वारुणी का पका फल, कमलगट्टा और काली मिर्च गौ के मूत्र में पीसकर नास लेने से ब्रह्मराक्षसादि एवं भूतादि की बाधाएं शान्त होती है।

॥ भूत निवारण अंजन ॥

पुष्पे कुष्माण्डतोयेन निशांसम्पिष्टनिर्मिताम् ।
गुटिकांजनमात्रेण भूतग्रहविनाशिनी ।।

कोंहड़े के फूल के रस में हल्दी को पत्थर के खरल में खूब घोटकर अंजन बनाकर आँख में लगाने से भूतादि की बाधा अवश्यमेव शान्त हो जाती है।

अथ भूत नाशन मन्त्र

'ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः कोशेश्वराय नमो ज्योति पतंगाय

नमो नमः सिद्धिरूपीरुद्राय ज्ञपति स्वाहा।

इस मन्त्र को यथाशक्ति जप करने से कठिन से कठिन ग्रह शान्त हो जाते है।

॥ अथ अजपा महात्म्य ॥

सद्योजातं तथा घोरो रुद्रोमनसि संस्थितम्।
स्वरं निरन्ति जन्तुनामशेषं सिद्धवंदितः।।

शंकरजी के अघोर मन्त्र का अजपा जाप करने से ज्वर शान्त होता है।

॥ ज्वर विनाशक प्रयोग ॥

प्रयुक्तासर्सीततोविद्याल्लिखिता बटपल्लवे।
पावकेनज्वरं हन्तितस्यावलोकनमात्रतः।।

बरगद के पत्ते पर निम्नलिखित मन्त्र कोयले से लिखकर ज्वरग्रस्त व्यक्ति को दिखाने से ज्वर उतर जाता है।

॥ अथ ज्वर नाशन मन्त्रः ॥

'ॐ नमो भगवते रूद्राय छिन्धि छिन्ध ज्वरं ज्वराय ज्वरोज्वलित कपाल पाणये हुं फटु स्वाहा।'

॥ अथ द्वितीय ज्वर नाशन मन्त्रः ॥

'ॐ नमो भगवते रूद्रायभूताधिपतये हुं फट स्वाहा।।'

लिखित्वा दक्षिणेबाहौ बुद्धवानित्यं ज्वरापहम्।।
अष्टोत्तरशतंजप्तवामन्त्रं त्रैमासिके ज्वरे।
ज्वरगस्तायतं दद्यादाचार्ये ज्वरशान्तये।।

इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर दाहिने हाथों में बांधे तथा नित्य १०८ बार जाप करें तो सब प्रकार के ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

॥ अथ उन्मादददायक प्रयोगः ॥

जलं कनकबीजानि धूतचूर्णसमन्ततः।
गृहे चेटकविष्ठां तु तथा बीजकरं जलम्।।
खाने पाने प्रजातव्यं दत्तोन्मत्तो भविष्यति।
तदुन्मत्तकचूर्णतुभक्षणात्तत्क्षणात् व्रजेत्।।
एक विंशतिवारानभिमन्त्र्य प्रयत्नतः।।

धतूरे के बीज, लोहे का मुर्चा, गोह की विष्ठा, करंज का बीज समान भाग ले चूर्ण करें और जल में मिलाकर खाने-पीने के साथ देने से पागलपन होता है तथा निम्नलिखित मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित करके जल पिला देने से पागलपन शान्त हो जाता है।

॥ अथ उन्मादनाशन मन्त्रः ॥

'ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये पिशाचाधिपतये आवेशय कृष्णपिगालाय फट् स्वाहा।'

लक्ष जपात सिद्धि भवति।

॥ अथ शत्रु रोगी प्रयोगः ॥

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि योगं परमदुर्लभम् ।
शत्रुणामपकारर्थ यथा मम प्रकाशितम् ।।
येनयोजितमात्रेण शत्रुदेहेसमन्ततः ।
विस्फोटकाश्च जायन्ये घोराःशत्रुविनाशकाः ।।

शंकर जी कहते हैं कि अब मैं शत्रुओं को पीड़ा पहुंचाने की विधि कहता हूं—जिसके प्रयोग करने से शत्रु व्रणी (फोड़ा-फुंसी वाला) होकर नष्ट हो जाता है।

॥ अथ व्रणी प्रयोगः ॥

कीटकं भ्रमरं चापि कृष्ण वृश्चिकमेव च ।
मूषकस्य शिरो ग्राह्यं मर्कटस्य तथैव च ।।
कृत्वैकत्र समानानि पाषाणे च विचूर्णयेत् ।
यमदण्डसमं चूर्ण दुर्तिवारं सुरैरपि ।।
योजयेच्छत्रु संघाते वस्त्रे शय्यामु यत्नतः ।
विस्फोटाः सर्वगात्रेणु जायेन्तेऽतिभयावहाः ।
पीडय सप्तरात्रेण म्रियतेनात्र संशयः ।।

सर्प, भौंरा, काला बिच्छू एवं बन्दर के सिर को सम भाग लेकर चूर्ण कर शीशी में भर ले। इसे शत्रु की शय्या पर या उसके वस्त्रादिकों पर डाल दे तो इसके डालते ही शत्रु व्रणों से पीड़ित होकर मर जायेगा। यह चूर्ण यमदण्ड के सदृश है जिसका निवारण देव-देवतादिक भी नहीं कर

सकते मनुष्यों की तो क्या गणना है।

नीलोत्पलं सकुमुदं तथा वै रक्तचन्दनम्।
कुक्कुटीपित्त संयुक्तं पेषयित्वाप्रयत्नतः।
तदालेपेन मात्रेण सद्यः सम्पद्यते सुखम्।।

जब शत्रु को पीड़ारहित करना हो तो नील तथा लाल कमल एवं लाल चन्दन की मुर्गी के पत्ते में मिलाकर लेप करने से पीड़ा शान्त हो जायेगी।

॥ अथ विस्फोटककरण मन्त्रः ॥

'ॐ नमो भगवति गृहवराहोसभगे ठः ठः स्वाहा।'

लक्ष जपात् सिद्धि भवति

लक्ष जप द्वारा विस्फोटक मन्त्र सिद्ध कर लेना चाहिए।

॥ अथ कुष्ठीकरण प्रयोगः ॥

अथान्यत्संप्रवक्ष्याभि कुष्ठिकरणमुत्तमम्।
येनयोजितमात्रेण कुष्ठी भवति नान्यथा।।

अब मैं शत्रु को कुष्ठ रोग होने की विधि कहता हूं जिसके प्रयोग से शत्रु कोढ़ी होकर मर जाता है।

भल्लातकरसं गुञ्जा तथा वै माण्डुकादिका।
गहगोधी समायुक्ता खाने पाने च दापयेत्।
सप्तहात् जायते कुष्ठं तीव्रपीडा समन्वितम्।।

भिलावे का रस, घुंघुची एवं मेंढ़क, गृहगोधी को एक में मिलाकर खाने

पीने के सामानों में खिला-पिला देने पर सात दिनों में ही कुष्ठ रोग उत्पन्न हो जाता हैं

एतस्य प्रशमं वक्ष्ये यथा मम प्रजाशितम्।
धात्री खदिरनिम्बानिशर्करासहितानि च।।
विचूर्ण मधुसर्पिभ्यां जीणान्नेनप्रदापयेत्।
शालिभक्तं पटोलं च तथाशीघ्र विपाचितम्।
एतेन दत्तमात्रेण नरः सम्पद्यते सुखम्।।

आंवला, खैर एवं नीम का चूर्ण, घी, शहद एवं शक्कर मिलाकर पुराने चावल के साथ पीसकर खिलावें तथा परोरे की तरकारी और पुराने चावल का भात पथ्य दे तो कुष्ठ अच्छा हो जाएगा।

॥ अथ मक्षिकानिवारण प्रयोगः ॥

तक्रविष्ठेनतालेन लेपयेत् पुत्रिकाकृतम्।
तामादाय गृहद्याति मक्षिका नात्र संशयः।।

हरताल को जल में पीसकर लेप बनाले एक पुतली पर लेप करके रख दे तो उसे सूंघकर मक्खियां भाग जायेंगी।

॥ अथ मूषक निवारण प्रयोगः ॥

श्वेतार्कुदुग्धं कुल्थ्याश्चतिलचूर्ण तथैव च।
अर्कपत्रेतुन्यस्तानिमूषकान्तकराणि वै।।

तिल, कुल्थी का चूर्ण, सफेद मदार के दूध में मिलाकर मदार के पत्ते पर रख देने से चूहे भाग जाते हैं।

तालकं छागविण्मूत्रं सपलांडुं च पेषयेत।
आलिप्य मूषकतेन जीवितमेव विसर्जयेत्।
तंदृष्टवाथगृहंत्याक्तपलायन्तेहि कौतुकम्।।

बकरी के मूत्र में बकरी की लेड़ी तथा हरताल को प्याज सहित पीसकर चूहे के ऊपर लेप करके चूहा छोड़ देने से उसे देखते ही सब चूहे भाग जाते हैं।

॥ अथ मष्कुणनिवारणम् ॥

अर्कतूलमयी वर्तींभावयेत् यावकेन च।
दीपं तत्कटुतैलेन निःशेषा यान्ति मत्कुणा।।

मदार की रूई की बत्ती को महावर के रंग में कडुवे तेल के दीपक के जलाते ही खटममल भाग जाते हैं।

अर्जुनस्य फलं पुष्पे लाक्षाश्रीवासगुग्गुलम्।
श्वेतापराजिता मूलं भल्लातकविडङ्गकम्।।
धूपःसर्जरसोपेतः प्रदेयो गृहमध्यतः।
सर्पाश्चमत्कुणा मूषागन्धाद्यान्तिदिशीदशम्।।

अर्जुन का फल एवं पुष्प, लाख, चन्दन, गुग्गुल, सफेद अपराजिता की जड़, भिलावा वायविडंग इन सबको सम भाग लेकर चूर्ण करे। इसका धूप देने से सर्प खटमल और मूसे भाग जाते हैं।

॥ अथ सर्पनिवारण प्रयोग ॥

गुडश्रीवासभल्लातं विडंगत्रिफलायुतम्।

लाक्षार्कपुष्पप्रयुक्तश्च धूपोवृश्चिकसर्पहृत् ।।

गुड़, चंदन, वायविडंग, त्रिफला, लाख, मदार का फूल को एक में मिलाकर धूप देने से सर्प-बिच्छू भाग जाते हैं।

मुस्तासिद्धार्थ भल्लातकापकच्छलंगुडः ।
चूर्णभानुफलोपेतं लिहत्सर्जरसैः समम् ।।
मत्कुणाः मशकास्सर्पाःमूषका विषकीटका ।
पलायन्ते गृहं त्यढ़त्वा यथा युद्धेषु कातराः ।।

नागरमोथा, सरसों, भिलावा, केवाच का फल, गुड़ तथा मदार का फल इनको सम भाग ले चूर्ण करे। धूप देने से खटमल, मच्छर, सर्प, मूसे और भी विषैले किटाणु भाग जाते है जैसे कि कायर पुरुष युद्ध से भाग जाते हैं।

।। अथ मशकनिवारणम् ।।

भल्लातकविडंगानि विश्वकं पुष्पकरं तथा ।
जम्बुलो मशकं हन्ति धूपाद्वा गृहमध्यतः ।।

भिलावा, वायविडंग, सोंठ पोहकर मूल तथा जामुन इन सबको सम भाग ले चूर्ण करके धूप देने से मच्छर नष्ट हो जाते हैं।

।। अथ क्षेत्रोपद्रवनाशनं प्रयोगः ।।

अथक्षेत्रस्य सस्यानां सर्वोपद्रवनाशनम् ।
बालुकाश्वेतसिद्धार्थान् प्रक्षिपेत्क्षेत्रमध्यतः ।।
सलभाः सर्पकीटाश्च वराहा मृगमूषकाः ।

मशकास्तत्र नो यान्तिमन्त्रविद्या प्रभावतः।।

अब खेतों में उपजी फसलों को नष्ट करने वाले जन्तुओं के विनाशार्थ उपाय कहते हैं। बालू तथा सफेद सरसों को एक साथ मिलाकर खेत में डाल देने से टिड्डी, कीड़े, सूअर, मृग, मूसे, मच्छरादि सब प्रकार के जीव जन्तु मन्त्र के प्रभाव से भाग जाते हैं।

पूर्वाषाढ़ाख्यऋक्षे तु वन्दाम्बिभीतकवृक्षयाम्।
सस्यमध्ये क्षिपेत्तेन सस्यवृद्धिर्भवेध्रुवम्।।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में बहेड़े की बांझी लेकर निम्नलिखित मंत्र से अभिसन्त्रित करके खेत में गाड़ देने से अन्न को अधिक उपज होती है।

॥ अथ जन्तु मन्त्र कथनम् ॥

"ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा।"

अयुत जपात् सिद्धि भवति।

यह मन्त्र दस हजार जपने से सिद्ध होता है।

॥ अथ रक्तनिवारणम् ॥

शैलुषत्वचा मिश्रितं तण्डुलानां, विधाय पिष्टं विनीयोजनीयम्।
कन्दर्पगेहे मृगलोचनायां, रक्तं निहन्त्याशु हठेन योगः।

लिसोड़े की छाल और साठी के चावल की पोटली बांध इसे स्त्री की योनि में रख देने से खून का गिरना बन्द हो जाता है।

धात्री च पथ्या च रसाञ्जनं च, कृत्वा विचूर्ण सजलंनिपीतम्।

अत्यन्तरक्तोत्थिमुग्रवेगं निवारयेत्सेतुमिवाम्बुपूरम्।।

आंवला, बहेड़ा तथा निसोल का चूर्ण जल के साथ पीसकर के पीने से अधिक गिरता हुआ रक्त भी बन्द हो जाता है।

मूलं तु शरपुंखाया पेषयेत्तण्डुलोदके।
पीबेत्कर्षकमात्रं तु बहुरक्तप्रशान्तये।।

चावल का धोवन तथा सरसों की जड़ को पीसकर पीने से प्रायः स्त्रियों का खून बन्द हो जाता है। यह ध्यान रहे कि दवा की मात्रा दस मासे से अधिक न हो।

दार्वीरसांजनवृषार्द्धकिरातविल्वं, भल्लातकैरथकृतोमधुनाकषायः।
पीतो जयत्पतिबलं प्रदरं सशूलं पीतं सितारुणविलोहितनीलकृष्णम्।

देवदारु, रसांजन, चिरायता, भिलावा, अडूसा, नागरमोथा इन सबका क्वाथ घी और शहद से सिद्ध करके पीने से शूल प्रशल सब प्रकार के प्रदर आदि रोग शान्त हो जाते हैं।

॥ अथ बन्ध्यात्वनाशन प्रयोग ॥

समूलपत्रां सार्पक्षीं रविवारे समुद्धरेत्।
एकवणगवांक्षोरे कन्याहस्तेन पेषयेंत्।।
ऋतुकाले पिबेद्धन्ध्या बलार्द्ध तद्दिने दिने।
क्षरशाल्यन्नामुद्गं च लध्वाहारं प्रदापयेत्।
एवं सप्तदिनं कुर्यात्बन्ध्या भवति गर्भिणी।।

रविवार को सुगन्धरा की जड़ को लाकर एकवर्णा गौ के दूध के साथ पीसकर ऋतुकाल में पीने से तथा साठी का भात एवं मूंग की दाल का पथ्य खाने से वन्ध्यादोष नष्ट होता है।

उद्वेगं भयशोको च दिवानिद्रां विवर्जयेत्।
न कर्म कारयेत् किंचित् वर्जयेच्छीतमातपः।।
न तथा परमां सेवां कारयेत् पूर्ववत् क्रियाम्।
पतिसंगाद्गर्भलाभो नात्र कार्य्या विचारणा।

दवा खाते समय स्त्री को किसी प्रकार की चिंता शोक, भय अधिक परिश्रम, दिन में सोना, गर्म चीजों का सेवन, धूप तथा अधिक ठंड से बचना चाहिए। ऐसे पथ्य से रहते हुए पति के साथ सहवास करने से वन्ध्या स्त्री अवश्य ही गर्भवती हो जाती है।

मुस्ता प्रिङ्गु सौवीरं लाक्षाक्षौद्रं समं पिबेत्।
कर्वतन्डुलतोयेन बन्ध्या भवति पुत्रिणी।
पथ्यमुक्तं यथापूर्वन्तद्वत्सप्तदनं पिबेत्।।

नागरमोथा, कंगुनी, बैर, लाहरस तथा मधु को बराबर लेकर पुराना चावल के धोवन के साथ एक तोले की मात्रा में सात दिनों तक पूर्वोक्त पथ्य से पीवे तो वन्ध्या अवश्य ही गर्भ धारण कर लेती है।

सपिप्पली केशर शृङ्गवेरक्षुद्रेषणं गन्ध घृतेन। पीतम् वन्ध्यापि पुत्रं लभते हठने, योगस्तु साऽयं विधिना मयोक्तः।।

पीपर, केसर आदि व काली मिर्च घी के साथ चूर्ण करके खाने से

वन्ध्या गर्भवती हो जाती है।

मूलंशिफावा किल लक्ष्मणाया, ऋतौ निपीय त्रिदिनं पयोभिः।
क्षीरोन्नचर्या नियमेन भुंक्ते, पुत्रं प्रसूते वनिताविचित्रम्।।

सफेद कटेली तथा जटामासी के पत्ते नये दूध के साथ पीसकर पीने से वन्ध्या गर्भवती हो जाती है।

तुरंगगन्धाघृतवारिसिद्धमाज्यं पयः दिने च पीत्वा।
प्राप्नोतिगर्भयमंचरन्ती वन्ध्या च नूनं पुरुष प्रसंगात।।

असगन्ध को जल में पकाकर घी में भूने। प्रातः स्नान करके दूध व घी के साथ इसे खाये तो वन्ध्या पुत्रवती हो जाती है।

कृष्णापराजिता मूलं वत्सक्षी रेणसंपिवेत्।
ऋतुस्नाता त्रिघस्रं तु वन्ध्यागर्भधराभवेत्।।

रजोधर्म की शुद्धि के पश्चात् काली[1] अपराजिता की जड़ को बछडे वाली नवीन गौ के दूध में तीन दिन तक पीने से वन्ध्या गर्भवती हो जाती है।

नागकेशरकं चूर्ण नूतनाद्रव्यदुग्धतः।
पिबेत्सप्तदिनं दुग्धं धृतैर्भोजनमाचसतेत्।।
तद्दवौ लभते गर्भ सा नारी पतिसंगता।।

पहले ब्याही हुई गौ जिसके साथ बछड़ा हो ऐसी गौ के दूध के साथ

१—काली अपराजिता नहीं होती अतः प्रयोग में नीली अपराजिता ग्रहण करें।

नागकेशर का चूर्ण सात दिनों तक पीने से तथा घी दूध का भोजन करने से वन्ध्या भी पुत्रवती होती है।

तिलरसगुचैवं गोपुरीषानि योगातरुणवृषभ मूत्रंप्रस्थयुक्तं विपक्वम्। ऋतुदिवस तु मध्ये सप्त वारंचपीतंजनयतिसुतमेतम्निश्चितंपुष्टिपतैव।।

तिल, रस, गुड़ तथा नये जवान बछड़े का मूत्र १ सेर लेकर एक हण्डी में गौ की कंडी पर पकावे। पकने के बाद ऋतु के समय सात बार पीवे तो अवश्य बन्ध्या पुत्रवती हो जाएगी।

कदम्बपत्रं श्वेतं च वृहतीमूलमेब च।
एतानि समभागानि ह्यजाक्षीरेण पेषयेत्।।
त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा पिबेदेतन्महौषधम्।
निपीयमाने तु सदा गर्भो भवति निश्चितम्।।

कदम की पत्ती, सफेद चन्दन तथा कटेरी की जड़ इस सबको समान भाग लेकर बकरी के दूध के साथ पीसकर पीने से अवश्य ही वन्ध्या पुत्रवती होगी।

विष्नुक्रान्तासमूलं तु पिष्ट्वादुग्धेषुमाहिषैः।
महिषीनवनीतेन ऋतुकाले तु भक्षयेत्।।
एवं सप्तदिनंकुर्यात्पथ्यमुक्तं च पूर्ववत्।
गर्भ सा लभते नारी काकबन्ध्या सुशोभनम्।।

विष्णुकान्ता की जड़[1] को भैंस के नूतन घी के साथ सात दिनों तक खाने से काक वन्ध्या भी पुत्रवती हो जाती है।

---

१. इसे सफेद अपराजिता कहते हैं।

गर्भे संजातमात्रे तु पश्चान्मासा़च्चवत्सरात्।
म्रितते द्वित्रिवर्षाया यस्याः सामृतवत्साका।।
प्राङ्मुखा कृत्तिकार्के तु वध्वा कर्कोटकीं हरेत्।
तत् कन्दं पेषयेत्तोयैः कर्षमात्रंसदापिबेत्।
ऋतुकाले तु सप्ताहं दीर्घजीवी सुतो भवेत्।।

जन्म लेने के पश्चात् जिस स्त्री का पुत्र मर जाता है उसे मृतवत्सा कहते हैं। जिस रविवार को कृत्तिका नक्षत्र हो उस दिन पोत पुष्पा नाम की जड़ी जड़ सहित लावे और उसे पानी में सात दिनों तक पीसकर दस मासे की मात्रा में पीवे तो पुत्र न मरे।

या बीजपुष्पद्रुममूलमेकं, क्षीरेणसिद्ध, हविषामिमिश्रम्। ऋतौ तु पीत्वा स्वपतिंप्रयाति, दीर्घायुषं सा तनयं प्रसूते।।

नींबू के पुराने पेड़ की जड़ को दूध में पीसकर घी मिलाकर पीने और पति से प्रसंग करने पर स्त्री को दीर्घजीवी पुत्र होता है।

॥ अथ गर्भस्तम्भनम् ॥

अकस्मात् प्रथमे मासे गर्भे भवति वेदना।
गोक्षीरैः पेशयेत्तुल्यं पद्मकोशीरचन्दनम्।।
पलमात्रं पिबेन्नारी त्र्यहादूगर्भः स्थिरो भवेत्।
अथवा मधुकं दारु शाकवृक्षस्य बीजकम्।
सम्पिष्यक्षीरकाकोलींपिबेत्क्षीरैस्तुगोभवैः ।।

प्रथम मास के गर्भ में यदि अकस्मात ही पीड़ा उत्पन्न हो जाये तो

गौ के दूध में पदमारन लालचन्दन व खस को बराबर पीसें और एक-एक तोला तीन दिन पीने से गर्भ नहीं गिरता अथवा मुलेहठी, देवदारु, सिरस का बीज को काली गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से भी गर्भ गिरने से रुक जाता है।

नीलोत्पल मृणालं च योष्टिकर्कटश्रृंगिकौ।
गोक्षीरैस्तु द्वितीये च पीत्वा शाम्यति वेदना।।

नील कमल की जड़, लाह का रस, काकड़ासिंगी ये बराबर लेकर गौ के दूध में पीसकर पिलाने से दूसरे मास की गर्भ की पीड़ा अच्छी हो जाती है।

अथवाश्वत्थबल्कं च लिं कृष्णं शतावरीम्।
मंजिष्ठासहितपिष्ट्वा पिदेत्क्षीरैश्चतुर्गुणः।।

पीपल के छाल, काला तिल, शतावरी इन सबको बराबर बराबर लेकर गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से दूसरे मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी होती है।

श्रीखण्डं तगरं कृष्ठं मृणालं पद्मकेशरम्।
पिवेच्छीतोदकैः पिष्ठं तृतीये वेदनावता।
अथवाक्षीरकाकोलींबलांपिष्ट्वा पयः पिबेत्।।

चन्दन, तगर, कूट, कमल की जड़, की कमल की केशर, काकोली और असगन्ध इन सबको ठण्डे पानी के साथ पीसकर पीने से तीसरे मास के गर्भ की पीड़ा ठीक हो जाती है।

नीलोत्पलं मुणालानि गोक्षरं नागकेशरम्।
तुऽर्यमासे गवां क्षीरः पिबेच्छाम्यति वेदना।।

नील कमल व क़मल की जड़, गोखरू को गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से चौथे महीने के गर्भ की पीड़ा ठीक हो जाती है।

पुनर्नवाथकाकोलींतगरंनीलमुत्पलम् ।
गोक्षरंपञ्चमेमासेगर्भक्लेशहरं पिबेत् ।।

गदहपूर्णा, काकोली, तगर नीलकमल, गोखरू गौ के दूध के साथ पीने से पाँचवें मास के गर्भ की पीड़ा ठीक हो जाती है।

सितांकपिब्थमञ्जां च शीतोयेन पेषयत।
षष्ठेमासि गवांक्षीरैः पिबेत्क्लेशनि वृत्तये।।

कैथ का गूदा ठंडे पानी में पीसकर और गौ का दूध मिलाकर पीने से छठे मास के गर्भ की पीड़ा ठीक हो जाती है।

कशेरु पौष्करं मूलं श्रृङ्गटं नीलमुत्पलम्।
पिष्ट्वा च सप्तमेमासिक्षीरै पीत्वाप्रशाम्यति।।

कसेरू, पुष्कर मूल, सिंघाड़ा व नीलकमल पानी में पास कर पीने से सातवें मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी हो जाती है।

यष्टिपद्माक्षमुस्तं च केशरं गजपिप्लोम्।
लीनोत्पलं गवांक्षीरैः पिबेदष्टममासिके।।

मुलेहठी, पद्माक्ष, मुस्क, नागकेशर, गजपीपर इन सब को गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से आठवें मास के गर्भ की पीडा ठीक हो जाती है।

विशालबीजकंकोलंमधुनासहपेषयेत् ।
वेदना नवमे मासि शान्तिमाप्नोति नान्यथा।।

इन्द्रायण के बीज, कंकोल को मधु के साथ पीसकर घोटें । इसे खाने से नवें मास के गर्भ की पीड़ा शान्त हो ·जाती है।

शर्करागोस्तनी द्राक्षा सक्षौद्रं नीलमुत्पलम् ।
पाययेद्दशमेमासि गवांक्षीरैः प्रशान्तये ।।

पुरानी खाँड, मुनक्का, छुहारा, शहद व नील कमल को गौ के दूध में पीने से दसवें महीने के गर्भ की व्यथा दूर हो जाती है।

अथवासुण्सिडसंसिद्धं गोक्षीरंदशशे पिबेत् ।
अथवा नघुकन्दारुं सुण्ठींक्षीरेण सम्पितेत् ।।

सोंठ डालकर पकाया हुआ गौ के दूध अथवा मुलेह्ठी, देवदारु और सोंठ गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से दसवें मास के गर्भ की व्यथा दूर हो जाती है।

धात्र्यञ्जनं सावरयष्टिकाख्यं, क्षीरंनिपीतं प्रमदा हठेन । सप्ताहमात्रं विनियोज्यनारी स्तम्भानिगर्भ चलितं न चित्रम् ।।

आंवला और मुलेहठी गौ के दूध के साथ पीने से गर्भ स्तम्भन हो जाता है अर्थात् फिर नहीं गिरता।

कुलालहस्तोद्भवकर्दमस्य वत्सीपयः क्षौद्रयुतस्य मात्रम् । गर्भच्युतिं शूलभयं निवार्य करोति गर्भ प्रकृतं हठेन ॥

कुम्भकार के हाथ में लगी हुई मिट्टी बकरी के दूध में मिला कर पीने से गर्भ की व्यथा शत प्रतिशत दूर होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है और फिर नहीं गिरता।

कोशेरुश्रृंगाटकजीरकाणि, पयोधनैरण्डशतावरीभिः। सिद्धं पयश्शर्करया विमिश्रं, संस्थापयेंद्गर्भमुधत्य शूलम् ॥

कसेरु, सिंघाड़ा, नागरमोथा और रेंड़ी इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण करे। सतावरी डालकर पकाये हुए गौ के दूध के साथ इसे खाने से गर्भव्यथा दूर होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है।

कन्दंकौमुपकस्य माक्षिकयुतं क्षीराज्यमिश्रं पिबेत्।
सप्ताहं सिताह मुपक्वसबला शीतीकृतं वायुना।।
गर्भस्त्रावमरोचकं च वपनं शोफ त्रिदोषं वमि, शूलं सर्वविधंनिहन्तिनियमादेवं घ यत्नस्मृतम्।।

कोई की जड़, शहद तथा घी को दूध में डालकर पकावे और ठंडा करके सात दिनों तक पीने से गर्भस्त्राव, अरुचि आदि सब प्रकार के विकार नष्ट हो जाते है।

कुबलयं सतिलं पीत्वाक्षीरेणमधुहितायुतम्।
गुरुतरदोषैश्चलितं गर्भस्थापयेदशु।।

कमल की जड़ जिसको मिस कहते हैं तथा तिल व मिर्च दूध में पीसकर पीने से गिरता हुआ गर्भ तुरन्त रुक जाता है।

हीबेराति विषा मुस्ता मारिचं संश्रृतं जलम्।
दद्याद्गर्भे प्रचलिते प्रदरेकुक्षियद्यपि।।

होबेर, अतीस, नागरमोथा व काली मिर्च का काढ़ा बना कर पीने से गर्भ का रोग दूर होता है।

गोक्षीरं शंर्करायुक्तं गर्भशुष्कप्रशान्तये।
पिबेद्वामधुकं चूर्ण गंभारीफलचूर्णकम्।।
समांसं गव्यदूग्धेन गुवण्याहिपगशान्तये।।

गौ के दूध में खाँड़ मिलाकर पीने से गर्भ का सूखना बन्द हो जाता है या गभारी के फल का चूर्ण मधु के साथ खायें या दूध पीवें तो भी गर्भ का सूखना बन्द हो जाता है।

दशमूलीश्रृतं तोयं घृतसैन्धवसंयुतम्।
शूलातुरापिबेन्नारी सा सुखेन प्रसूयते।।

दशमूल का काढ़ा, सेंधा नमक को घी में मिलाकर पीने से भी सुखपूर्वक बालक उत्पन्न होता है।

॥ अथ सुखप्रसव मन्त्रः ॥

"ॐ मन्मथः ॐ मन्मथः ॐ मन्मथः मन्मथः वाहिनी लंबोदर मुंच मुंच स्वाहा।।"

अनेनमन्त्रेण जलंसुतप्तं पातुं प्रदेयं शुचितारेण।
तोयाभिपानत्खलुगर्भवत्या, प्रसूयतेशीघ्र तरं सुखने।।

इस मन्त्र को अनेक बार पढ़कर जल को अभिमन्त्रित करके गर्भवती को पिलाने से प्रसव के कष्ट समाप्त होकर बालक सरलता से जन्म ले लेता है।

॥ अथ मासिक स्नान ॥

लांगलीकन्दचूर्ण वा मूलं वाऽपामार्गजम्।

इन्द्रवारुणिकामूलं योनित्थं पुष्पबन्धहृत् ।।

कलियारीकन्द, अपमार्ग या इन्द्रयन की जड़ का चूर्ण करके पोटली बाँधकर योनि में रखने से बन्द हुआ मासिक धर्म खुल जाता है।

तिलमूलंकथायन्तब्रह्मदण्डीयमूलकम् ।
यष्टी त्रिकटुकंचूर्ण क्वाथयुक्तं च पाचरेत् ।
पुष्परोधं रक्तगुल्मं स्त्रीणाँ सद्यः प्रणश्यति ।।

तिल की जड़, ब्रह्मदण्डी की जड़, मुलेठी, काली मिर्च तथा पीपर इस सबकी चटनी बना जल में डालकर काढ़ा बना इसे पीने से बन्द हुआ मासिक खुल जाता है और रक्तगुल्ल भी नष्ट हो जाता है।

ज्योतिष्मतौ कोमलपत्रमग्नौभ्राष्टं जपायाः कुसुमं च पिष्टम् ।
गृह्यम्बुनापीतमिदंसयुक्त्या, करोति पुष्पं स्मरमन्दिरस्य ।।

माल कंगनी के नवीन पत्र जपा-कुसुम[1] के फूल के साथ खाने से बन्द हुआ मासिक खुल जाता है।

॥ शिव उवाचः ॥

एतत्ते कथितं वत्स तन्त्रमुड्डीशमुत्तमम् ।
यस्मैतस्मै न दातव्यं रक्षणीयं प्रयत्नतः ।।

श्री शंकर जी ने कहा—हे रावण ! मेरे द्वारा तुम्हें प्रदत्त इस उड्डीश तन्त्र का सभी को ज्ञान नहीं कराना चाहिए। केवल योग्य पुरुष (अधिकारी)

---

१. जपाकुसुम की बन्द कली खाने मात्र से भी मासिक स्राव हो जता है। एवं गर्भाशय का संकोचन होता है। **—श्री यंशपाल जी**

को ही यह ज्ञान प्रदान करे अन्यथा अनिष्ट ही हो जायेगा। अतः जब तक उचित पात्र न मिले इसे गुप्त ही रखे।

(इति उड्डीश तन्त्र रावण-शिव सम्वादे विभिन्न प्रयोगादि कथन श्री यशपाल जी कृत समाप्तम्।)

॥ उड्डीश तन्त्र समाप्तम् ॥
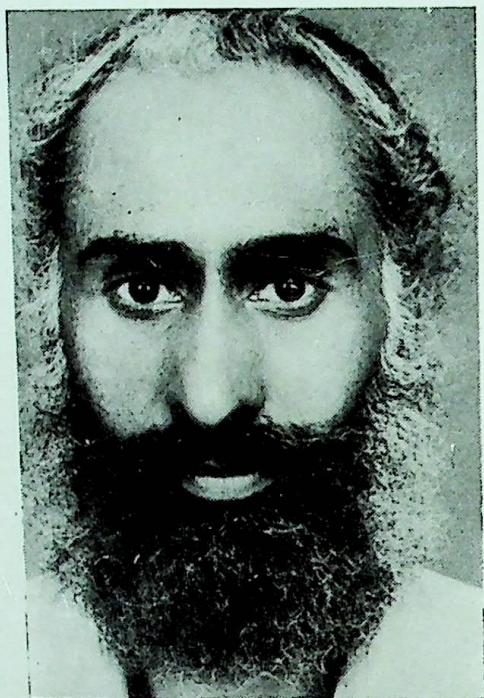
श्री यशपाल जी
संस्थापक एवं प्रबंध निर्देशक
तंज्योति गुह्यविद्या साधन
एवं अनुसंधाम केंद्र हरिद्वार

मन्त्र-तन्त्र के उद्‌भट विद्वान और भविष्यद्रष्टा श्री यशपाल जी ने ज्योतिष, योग एवं तन्त्र विद्या में देश-विदेश में अपूर्व ख्याति प्राप्त की है। इनका जीवन प्राचीन, शास्त्रीय और भारतीय मर्यादाओं से जुड़ा हुआ है। इन्होंने प्राच्य गुप्त विद्याओं की विविध शाखाओं के पुनर्जागरण में विशेष योगदान किया है। एतदर्थ अखिल भारतीय ज्योतिर्विज्ञान अध्ययन केंद्र की ओर से सम्मानित भी किया जा चुका है। इन्होंने अध्ययन व अनुसंधान से जो अनुभव पाया है उसे पुस्तकों के रूप में समाज को अर्पित करके सराहनीय कार्य किया है। परमात्मा श्री यशपाल जी को अधिकाधिक कार्य करने का बल तथा दीर्घायु प्रदान करें।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन), हरिद्वार (उ.प्र.)